जुलाई, 1982
वर्ष 18 ❋ अंक 1

ज्ञानामृत

मूल्य 1.25

१. केन्या में संयुक्त राष्ट्र द्वारा ऊर्जा के बारे में किए गए सम्मेलन के उद्घाटन के पश्चात् राष्ट्रपति महोदय डेनियल टी० अरप ग्रुप तथा अन्य अधिकारीगण राष्ट्रगान गाते हुए। ब्र० कु० रेखा जी इस सम्मेलन में सम्मलित हुईं।

२. नेरोबी में 'प्रथम श्रम दिवस' के अवसर पर "उद्योगिक शान्ति राष्ट्रीय शान्ति है" झांकी सजाई गई। इसे हजारों लोगों ने देखा।

भ्राता ओ० पी० मेहरा राज्यपाल राजस्थान, आबू पर्वत पर ब्र० कु० ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय में सपरिवार पधारे। उनका स्वागत ब्र० कु० दीदी मनमोहिनी जी कर रही हैं, साथ में ब्र० कु० निर्वैर जी तथा ब्र० कु० मोहिनी जी दिखाई दे रही है।

विजयवाड़ा में "विश्व शान्ति महोत्सव" का उद्घाटन ब्र० कु० प्रकाशमणि, मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० ई० विश्वविद्यालय द्वारा सम्पन्न हुआ। साथ में आन्ध्र प्रदेश के टैक्नीकल एजूकेशन के मन्त्री भ्राता टी० हयाग्रीवाचारी जी, ब्र० कु० ऊषा जी, मोहिनी जी ब्र० कु० रमेश तथा अन्य खड़े हैं।

आबू पर्वत पर स्थित अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग शिक्षण केन्द्र में बम्बई बोरीवली सेवा केन्द्र द्वारा प्रेषित शिविरार्थियों का एक ग्रुप दादी प्रकाश मणि जी, ब्र० कु० मनोहरइन्द्रा जी, ब्र० कु० शीलू बहन के साथ।

परगना मजिस्ट्रेट भ्राता मनराखनलाल शर्मा जी तथा ब्र० कु० गङ्गे बहन दीप जगा कर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे है। साथ में ब्र० कु० विद्या जी, भ्राता सुरेन्द्र नाथ मिश्रा जी, उषा जी व भ्राता गोरखदान जी खड़े हैं।

पेटलाद सेवा केन्द्र द्वारा खंभात नगर में आयोजित विश्वशान्ति आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन समारोह में रोटरी क्लब द्वारा ब्र० कु० चन्द्रिका बहन का स्वागत किया जा रहा है। साथ में डा० दिनेश जी, रोहित भाई पाठक (डिप्टी कलैक्टर) बैठे हैं।

कासरगढ (कर्नाटक) में विश्वशान्ति तथा विश्व भ्रातृत्व आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन स्वामी केशवानन्द भारती जी द्वारा दीपक जला कर किया जा रहा है।

मोगा में नव विश्व आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन ब्र० कु० दीदी मनमोहिनी जी द्वारा सम्पन्न हुआ। उद्घाटन में सहयोग दे रहे हैं स० नछतर सिंह जी, पंजाब विधान सभा के सदस्य, ब्र०कु० राज तथा अन्य।

ऋषिकेश सेवा केन्द्र की ओर से आई० डी० पी० एल० में आयोजित प्रदर्शनी के उद्घाटन के पश्चात् फैक्ट्री के जनरल मैनेजर भ्राता बजाज अपने विचार प्रकट करते हुए। साथ में ब्र० कु० प्रेम, हरजीत जी, तथा नीना जी बैठे हैं।

Regd. No. D (E)—70

→ धर्मशाला में विश्वशान्ति सम्मेलन के अवसर पर ब्र० कु० कमलेश आदरणीय दलाईलामा जी को बैज लगाते हुए। चित्र में (बाएं से) ब्र० कु० चन्द्रमणि जी, दलाईलामा जी, ब्र० कु० अचल जी, ब्र० कु० सुमन जी, तथा अन्य।

हरीया (बलसार) में आयोजित गीता प्रवचन के बाद भारत के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री भ्राता मोरार जी देसाई को साहित्य भेंट किया जा रहा है। ↓

ब्र० कु० रेखा कीनया के श्रम मन्त्री को "सर्वात्माओं के पिता" के चित्र पर समझाते हुए। ↓

↓ आबू पर्वत स्थित आध्यात्मिक संग्रहालय के वार्षिक उत्सव पर बच्चों की 'वाद विवाद स्पर्धा' आयोजित की गई। बाएं चित्र में एक बच्चा अपने विचार प्रटक करते हुए दाएं चित्र में ब्र० कु० ममता अपना अनुभव प्रस्तुत करते हुए

अमृत-सूची

क्र० संख्या	विषय	पृष्ठ	क्र० संख्या	विषय	पृष्ठ
१.	मानव खतरे में	१	१०.	विनाश की भयानक तैयारियां	१६
२.	श्रीमत (सम्पादकीय)	२	११.	सम्पादक के नाम पत्र	१९
३.	सतयुग और अनुभव	५	१२.	भाग्य और भाग्य-विधाता	२१
४.	गीत	७	१३.	काम महाशत्रु है (लघु नाटक)	२३
५.	हर कर्म में सत्यं-शिवं-सुन्दरम भी होना चाहिये (कविता)	८	१४.	पौधे की प्रेरणास्पद आत्म-कथा	२४
६.	योग-बल	९	१५.	विद्यार्थी जीवन का शृंगार—आध्यात्मिकता	२७
७.	विश्व-भ्रातृत्व	१३	१६.	सच्चा सलोगन (कविता)	२९
८.	ज्ञानामृत (कविता)	१५	१७.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	३१
९.	बच्चों प्रति	१५			

मानव खतरे में

राजस्थान के राज्यपाल भ्राता ओ० पी० मेहरा द्वारा वक्तव्य

वर्तमान समय हथियारों की होड़ एवं तकनीकी साधनों ने विश्व को विनाश की ओर प्रेरित कर दिया है। जिसके कारण मानव खतरे में है। आज जो विश्व शान्ति एवं सम्पन्नता के इच्छुक हैं उन्हें नि: शस्त्रीकरण को न केवल वाद-विवाद का विषय बनाना है अपितु उसका क्रियात्मक स्वरूप बनें। उन्होंने यह भी आशा प्रगट की कि इस प्रकार की आध्यात्मिक संस्थायें मानव में आध्यात्मिक जागृति लायेंगी। एक समय था जबकि आध्यात्मिकता एवं बुद्धिमता के लिये मनुष्यों का झुकाव पूर्वी देशों की ओर था लेकिन आज हम भौतिक प्राप्तियों के लिए पश्चिमी देशों की ओर खींचे चले जा रहे हैं। अब वह समय आ चुका है जब मानव फिर से आध्यात्मिकता के लिए पूर्वी देशों की ओर जायेगा। गीता का उदाहरण देते हुए कहा कि श्रेष्ठाचार अवश्य ही आयेगा। यह तब हो सकता है जब हम अपने आपको स्वच्छ बनायें तथा एक-दूसरे की मदद करें।

अन्त में संस्था को धन्यवाद करते हुए अपनी शुभ इच्छा प्रगट की कि यह संस्था नि:शस्त्रीकरण तथा नैतिक मूल्यों के उत्थान में सहयोग देगी।

राजस्थान के राज्यपाल महोदय भ्राता ओ० पी० मेहरा जी ने आबू स्थित अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग केन्द्र ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में भारत के विभिन्न स्थानों तथा विदेशों से आये हुए राजयोगी शिक्षकों के समक्ष अपने उपर्युक्त विचार प्रस्तुत किये।

लण्डन से आई हुई ब्रह्माकुमारी जयन्ती जी ने इस विद्यालय द्वारा देश-विदेश में हो रही सेवाओं से भी अवगत कराया।

यह शिक्षक भाई-बहनें फरवरी १९८३ में होने वाली विश्व शान्ति सम्मेलन की रूपरेखा तैयार करने के लिए एकत्रित हुए थे। भ्राता ओ० पी० मेहरा जी ने सपरिवार नक्की झील के समीप स्थित विश्व-नव-निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय का भी अवलोकन किया।

(ब्र० कु० करुना, आबू)

श्रीमत

यह बात तो सर्वमान्य है कि मनुष्य अल्पज्ञ है और उसके विचार अपने जन्म-जन्मान्तर के संस्कारों से रंगे हुए तथा कर्म-फल के आवरण से ढके हुए होते हैं। अतः कोई भी मनुष्य, चाहे वह कितना भी महान हो, पुरुषार्थ के विषय में जो अपने विचार प्रस्तुत करता है, उसमें ये तीन दोष तो सदा रहते ही हैं— (१) अल्पज्ञता, (२) अपने संस्कार और स्वभाव, (३) कर्म-फल का प्रभाव। अतः किसी भी मनुष्य का मत सम्पूर्ण रूप से कल्याणकारी नहीं हो सकता। एक परमपिता परमात्मा ही त्रिकालज्ञ हैं, आत्माओं रूपी बच्चों की जन्म-जन्मान्तर की जन्म पत्री को जानने वाले हैं और सम्पूर्ण निर्मल तथा कर्म फल से मुक्त हैं। इसलिए सभी मनुष्यात्माओं के लिए सामान्य रूप से और किसी भी मनुष्य के लिए व्यक्तिगत रूप से वे जो मत देते हैं, वह समर्थ और कल्याणकारी होती है।

मत के विषय में एक बात यह भी है कि किसी भी व्यक्ति को राय देने के लिए उसकी योग्यता और अयोग्यता, सामर्थ्य और असमर्थता, कठिनाई और सुविधा, परिस्थिति तथा स्वस्थिति को भी देखना होता है। डाक्टर भी जब किसी रोगी को किसी रोग के लिए निश्चित औषधि देता है तो उसके लिए यह निश्चित करता है कि उसको वह औषधि कितनी मात्रा में, किस रूप में, कितने-कितने समय के बाद और किस प्रकार से देनी चाहिए। वह किसी को एक गोली देता है और किसी को दो, किसी को दिन में दो बार तो किसी को चार बार, किसी को इंजेक्शन लगाता है तो किसी को पीने की दवाई अथवा लगाने के लिए मरहम देता है; किसी को खाने के लिए मना करता है तो अन्य किसी को खाने के लिए पौष्टिक पदार्थ बताता है। कोई भारी-भरकम व्यक्ति हो और युवा अवस्था के वेग-पूर्ण विकास में हो तो उसे अलग मात्रा में दवाई देता है और कोई छोटा बेबी हो तो उसी रोग के लिए उसे मीठी-मीठी, छोटी-छोटी गोलियाँ दे देता है। इसी प्रकार अध्यात्म में भी मत आत्मा के लिए एक प्रकार की औषधि ही है जो सबके लिए सामान्य होते हुए भी हर व्यक्ति की परिस्थिति-स्वस्थिति के अनुसार मात्रा में, समय में अथवा रूप मे कुछ अन्तर लिये हुए होती है। तथापि कुछ बातें ऐसी होती हैं जो मौलिक अथवा आधारभूत अथवा अनिवार्य होती हैं।

एक विशेष बात यह भी है कि किसी को राय इस प्रकार से दी जाये कि उसे कोई कार्य करना सहज, सुगम और सुहावना लगे। किसी ऊँची मंजिल तक हंसते-खेलते, खाते-पीते और मौज मनाते हुए बातों ही बातों में किसी को पहुँचा देना एक बहुत बड़ी कला है। यह कला, जिससे मनुष्य को चढ़ती कला वाले मार्ग पर ले जाया जा सकता है, भी मनुष्यों में नहीं होती बल्कि उनके अपने जीवन में अलबेलापन, थकावट, निराशा, द्वन्द्व, उलझन, परेशानी आदि देखी जाती है। वे मार्ग में आये हुए संकट को देखकर स्वयं अपनी ही समर्थ के विषय में संशय में पड़ जाते हैं, राई को पहाड़ मान लेते हैं अथवा मंजिल को दूर समझकर रुक जाते हैं। उदाहरण के तौर पर, ब्रह्मचर्य पालन को ही ले लें तो मनुष्य कहते हैं कि घर-गृहस्थ में रहते हुए आजीवन इस व्रत का पालन ही नहीं हो सकता। परन्तु इसके विपरीत शिव बाबा कहते हैं कि ये तो आपका आदि स्वरूप ही है और आप अनेक बार ऐसे रह चुके हैं; यह आपके लिए कोई नई बात नहीं है। इसी प्रकार, कई लोग कहते हैं कि मन को काबू करना तो असम्भव-सा है परन्तु शिव बाबा कहते हैं कि आप अपने स्वरूप और स्वधर्म को जानेंगे तो मन स्वतः ही

शान्त हो जाएगा। इस प्रकार, कंकर-पत्थर, खाई-खड्डे और काँटों तथा कठिनाइयों से अटे हुए मार्ग को पार करने के लिए शिव बाबा ऐसा मत देते हैं कि जिससे मनोरंजक तरीके से मंज़िल तक पहुँच जायें।

मत देने के विषय में एक ज्ञातव्य बात यह भी है कि जीवन-भर के लिए एक ही किश्त में सारा मत तो दिया नहीं जा सकता बल्कि चलते-चलते व्यावहारिक रूप में जो परिस्थिति अथवा जो अवस्था आती है, उसी अवसर से सम्बन्धित मार्ग-दर्शना, उत्साह-वर्द्धन आदि की आवश्यकता होती है। अतः मुक्ति-जीवन्मुक्ति की राह दिखाने के लिए जिस मत की आवश्यकता है, ऐसी मत देने वाला तो एक परमात्मा ही हो सकता है जो हमारे जीवन-यात्रा तक हमें अपना साथ और हाथ दे सके और किसी भी कारण से हमारा साथ न छोड़ें। यदि मत देने वाला स्वयं ही कोई रोगाधीन, जराधीन, असमर्थ व्यक्ति होगा तो वह अपने मत का सहारा देने के लिए सदा हमारे साथ नहीं होगा। एक परमात्मा ही ज्योति स्वरूप, जन्म-मरण रहित और जरा-व्याधि से मुक्त है जो हमें अपने मत का लाभ जीवन-पर्यन्त सहज-सुलभ रूप से देकर हमारा कल्याण करके ही रहते हैं।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखने से परमात्मा का अस्तित्व भी सिद्ध होता है। हरेक व्यक्ति सम्पूर्ण सुख और सम्पूर्ण शान्ति की मंज़िल तक तो पहुँचना चाहता ही है और यह सत्य अकाट्य है कि उस लक्ष्य तक ले जाने वाला स्वयं सम्पूर्ण सुख-शान्ति सम्पन्न एक परमात्मा ही है जिसका मत सम्पूर्ण रूप से सत्य, समर्थ और कल्याणकारी है। अतः जो लोग परमात्मा के अस्तित्व में ही विश्वास नहीं रखते उन्हें सोचना चाहिए कि तब वे किसके मत पर चलकर एक सम्पूर्ण सुख-शान्ति सम्पन्न जीवन की कामना करते हैं? इतिहास के पन्ने इस सत्यता की साक्षी देते हैं कि बड़े-बड़े ऋषि-मुनि, पीर-पैगम्बर, भक्त-उपासक, मनीषि-चिन्तक, वीर और योद्धा तथा नेता और नीतिज्ञ अपने-अपने विचार-चिन्तन, सिद्धान्त और सिद्धि या बल और मत के आधार पर संसार को सम्पूर्ण सुख-शाति सम्पन्न नहीं बना सकते। अतः जैसे हर समस्या का कोई समाधान हुआ करता है, वैसे ही इस अभाव को पूर्ण करने के लिए एक सम्पूर्ण आत्मा अर्थात् परमात्मा भी है अवश्य जो अपना सम्पूर्ण मत देकर सबका कल्याण करता है। उसके अस्तित्व को न मानना गोया यह मानना है कि मनुष्य सम्पूर्ण शान्ति और सम्पूर्ण सुख के लक्ष्य तक कभी पहुँच ही नहीं सकता।

अब यह एक अत्यन्त सौभाग्य की बात है कि जिसके अस्तित्व में संशय करके मनुष्य सत्य से भटक गया है अथवा जिसके स्वरूप के बारे में वह खोज कर-करके थक चुका है, उस त्रिकालज्ञ परमात्मा का सम्पूर्ण सत्य और श्रेष्ठ मत हमें मिल रहा है और वह हमें अपना हाथ-साथ, सहयोग-सहारा, सामर्थ्य और सानिध्य देकर हमें सतत सुख-शान्ति के द्वार तक ले चल रहा है और उस द्वार के बहुत निकट हम आ पहुँचे हैं।

हम तो उस परमपिता परमात्मा के मत की श्रेष्ठता के चिरानुभवी हैं। उसके मत पर चलने से जीवन कैसा श्रष्ठ बनता है, उसका साक्षात उदाहरण प्रजापिता ब्रह्मा के रूप में हमारे सम्मुख है। उस जीवन की महिमा करने बैठें तो महिमा से भी एक महान पुस्तक बन जाएगी परन्तु उस आदर्श जीवन के अतिरिक्त हम सब ने अपने-अपने जीवन में भी यथा-पुरुषार्थ श्रीमत का पालन करके उसकी श्रेष्ठता का अनमोल अनुभव पाया है। परन्तु जब हम कुछ नवागन्तुक पुरुषार्थियों के सम्मुख श्रीमत की चर्चा करते हैं तो वे हमसे पूछते हैं कि वह श्रीमत क्या है जिससे जीवन श्रेष्ठ बनता है? वे इसकी रूप-रेखा जानना चाहते हैं ताकि वे भी अपने जीवन को उसके अनुसार ढाल सकें। हम उन्हें कहते हैं कि शिव बाबा की मुरली ही श्रीमत का स्रोत है। मुरली ही के झरने से अथवा अमृत सरोवर से हम श्रीमत रूपी अमृत पीकर अपने जीवन को कृत-कृत कर सकते हैं। परन्तु चूंकि मुरलियाँ तो बहुत बड़ा ज्ञान, भंडार हैं, एक सामान्य व्यक्ति थोड़े-से सयय में उसका सार जानने की कामना करता है। यों उसका सार भी थोड़ा-सा विस्तार पाकर अधिक स्पष्ट होता है परन्तु फिर भी हम विस्तार के

सार के सार का भी सार करते हैं।

१. श्रीमत का पहला सूत्र यह है कि हमें स्वयं को आत्मा निश्चय कर, आत्मा के शान्ति रूपी स्व-धर्म में टिक, दूसरों को भी आत्मा देखते हुए आत्म-स्थित होकर कार्य करना है।

२. हमें स्वयं को ब्रह्मा-मुखवंशी ब्राह्मण समझ कर ब्राह्मणों के लिए निर्धारित श्रेष्ठ नियमों, मर्यादाओं और विधियों का पालन करना है। उदाहरण के लिए ब्रह्मचर्य व्रत का पालन, आहार की शुद्धि, संग की शुद्धि और प्रतिदिन ईश्वरीय ज्ञान का श्रवण-मनन तथा अमृत वेले का योग और सिनेमा न देखने, नॉवल न पढ़ने रूप नियमों का पालन करना।

३. देह के सम्बन्धों, पुराने रीति-रिवाजों, भक्ति मार्ग की प्रचलित प्रथाओं से आसक्ति मिटाने, उपराम होने और न्यारा बनने का लक्ष्य सामने रखते हुए हर लौकिक सम्बन्ध व कार्य को अलौकिक बनाना।

४. तन,मन, धन को शिव बाबा का समझकर स्वयं को निमित्त मानकर न्यासी (Trustee) की न्यायीं चलना, सादा जीवन व्यतीत करना और मान तथा शान को सामने न रखकर त्याग-तपस्या को सामने रखना।

५. सदैव लोक संग्रह को सामने रखना और लोक-कल्याण की भावना के विपरीत कोई कार्य न करना। इस प्रकार जीवन को एक यज्ञ मानकर और सेवा को ध्यान में रखकर कल्याण कार्य में लगे रहना।

६. ब्राह्मण परिवार अथवा दैवी परिवार के साथ स्नेह, सहयोग, सम्मान, और सेवा का नाता निभाना और कोई भी ऐसा कार्य न करना जिससे इस परिवार की ग्लानि हो या इसकी मर्यादा भंग हो। सबसे खीर-खण्ड बनकर चलना।

७. संगम युग को छोटा-सा युग मानकर और महाविनाश को निकट जानकर नष्टोमोहः स्मृतिर्लब्धः की शिक्षा को धारण कर कमल फूल समान और योग-युक्तजीवन व्यतीत करते हुए चढ़ती कला का पुरुषार्थ करना और दिनोंदिन अपनी शक्ति, रूहानियत आदि को बढ़ाते रहना। स्थूल तथा सूक्ष्म सेवा में ही श्वास, समय, सामर्थ्य, सम्पत्ति आदि को अधिकाधिक लगाते हुए सबका आशीर्वाद पाने का पुरुषार्थ करना।

८. बाबा की जीवन-कहानी को सामने रखते हुए अपनी परिस्थितियों को उनकी तरह स्वस्थिति से और समस्याओं को योग बल से सहज ही हल करना।

९. कोई भी विघ्न, परीक्षा, समस्या या विकट परिस्थिति सामने आये और उसमें स्वस्थिति में कुछ हलचल पैदा हो तो अपने से जो बड़े निमित्त हैं, अर्थात जो योग और धारणा में आगे हैं, उनसे सहयोग लेकर चलते चलना अर्थात शिव बाबा का हाथ, साथ और दैवी परिवार का संग तथा स्नेह तथा ज्ञान के श्रवण-मनन को छोड़ने का कभी भी संकल्प न करना बल्कि अंगद के समान अथवा महावीर की न्यायीं अपने कदम हिलने नहीं देना।

ऊपर हमने अत्यन्त संक्षेप में श्रीमत के कुछ स्तम्भ अथवा नींव-जैसे सूत्र दिये हैं। इनमें से कुछेक को अधिक महत्त्व देने के लिए पुनरोक्त भी किया गया है। इनसे विपरीत जो भी कार्य हों, वे श्रीमत के विरुद्ध ही होंगे और हमें सम्पूर्णता की ओर ले जाने वाले नहीं होंगे।

जगदीश

कृपया ध्यान दीजिये

ज्ञानामृत में छपवाने हेतु केवल विशेष विशेष व्यक्तियों और विशेष आयोजनों पर लिये गए फोटो भेजें। किसी भी समारोह का एक से अधिक फोटो छापना कठिन होगा।

व्यवस्थापक

सतयुग और अनुभव

(ले० ब्र० कु० रमेश, गामदेवी—बम्बई)

बहुत समय पहिले मैंने एक बार मीठे साकार बाबा से पूछा था कि बाबा मेरे में क्या कमी है ? तो बाबा ने कहा कि 'बच्चे तुम्हारे में सेन्टर खोलना और चलाने के अनुभव की कमी है। यह अनुभव भी चाहिये—जरूरी है।' बाद में न्यूयार्क में दो मास के लिए सेन्टर खोलने तथा संभालने का अनुभव भी बाबा ने कराया। ऐसे ही एक बार मैंने मीठी जगदंबा मातेश्वरी जी से पूछा कि 'मम्मा, आप मुरली जो चलाते हो, क्या उसकी तैयारी पहिले से करते हो ?' इस पर मम्मा ने कहा 'नहीं, रमेश जी, मैं तो बाबा को याद करती हूँ और बोलती हूँ।' अब तो मुझे विचार सागर मंथन करने का तथा मुरली चलाने का अभ्यास (अनुभव) हो गया है। ऐसे ही बचपन में मैंने लौकिक माता को कहा कि मुझे रोटी कैसी बनानी चाहिये, उसका पूर्ण ज्ञान है परन्तु जब मैं रोटी बेलता हूँ तब वह गोल नहीं परन्तु भारत का नक्शा बन जाती है—तो क्यों यह रोटी मेरे से गोल नहीं होती ? तब लौकिक माता ने कहा कि बच्चे, ज्ञान के साथ-साथ जब बेलने का अनुभव हो जायेगा तब तेरी रोटी भी गोल बनेगी। अर्थात् ज्ञान होते भी अनुभव न होने के कारण कार्य यथार्थ रूप से सिद्ध नहीं होता था।

सितार या वीणा तो वही है परन्तु अनुभवी उस्ताद उससे सुमधुर स्वर का गुंजन करा सकता है और उसी सितार या वीणा के, एक अनुभव-रहित व्यक्ति द्वारा मधुर स्वर के बजाय शायद तार ही टूट जायेंगे। गले से तो सबकी प्रायः एक जैसी ही आवाज निकलती है परन्तु विश्व प्रसिद्ध गायक तानसेन उसी गले से दीपक राग गाकर दीपक की ज्योति जगाता था और अन्य कोई मेघ-मल्हार राग गाकर बरसात लाता था। इसका कारण क्या—फर्क क्यों ? जवाब है अनुभव के कारण प्राप्त सिद्धि। ऐसे ही योग में ब्रिदुरूप का ज्ञान होना एक चीज है और उसका अनुभव होना और बात है। आज की दुनिया में पैसे वाले, विद्वान, शास्त्री आदि बहुत हैं परन्तु अनुभवी कम हैं। तो यह अनुभव क्या चीज है और उसका सतयुग से क्या सम्बन्ध है ?

विकार तो पाँच ही हैं—काम, क्रोध, लोभ, मोह और देह-अहंकार परन्तु इनके साथ-साथ छठा विकार भी है आलस्य और अलबेलापन। वैसे ही ज्ञान के चार प्रमुख विषय (Subjects) हैं, ईश्वरीय ज्ञान, योग, धारणा और सेवा। परन्तु जैसे चार युग होते भी पाँचवा संगमयुग है ऐसे ही पाँचवा विषय (Subject) है अनुभव, जो सिर्फ सीखना नहीं परन्तु पाना भी है। अनुभव कोई पाठशाला (School) या विश्वविद्यालय (University) में सिखाया नहीं जाता और ना ही उसकी कोई दुकान या किताब है। यह तो करने से ही आता है। किसी भी बात (अभ्यास) का जो जितना ज्यादा पुरुषार्थ करता है वह उसी प्रमाण में उस बात का अनुभवी बनता है। यदि किसी व्यक्ति को जिस बात का अनुभव नहीं वह उस बात को मानेगा वा समझेगा भी नहीं। इसी कारण मैंने अभी-अभी एक गीता के प्रसिद्ध विद्वान से पूछा था कि 'आप गीता में वर्णित स्वर्ग को मानते हो ? तो उसने 'ना' कहा था। इस बात पर विचार करने से मालूम हुआ कि उनका कहना यथार्थ है क्योंकि विद्वान, पंडित, तथा संन्यासी महात्माओं का सतयुगी स्वर्ग यह अनुभव नहीं, वहाँ पर वे आये ही नहीं, उसी कारण वे सतयुग को कैसे मानेंगे। दूसरी बात—वर्तमान प्रचलित गीता से स्वर्ग की रचना ही नहीं हुई अर्थात् वर्तमान प्रचलित गीता का परिणाम स्वर्ग नहीं है तो फिर उसी गीता में वर्णित स्वर्ग को वे लोग कैसे मानेंगे ?

शुरू में पंडितों से मैं एक सवाल पूछता था कि यजुर्वेद में लिखा है कि वेद कहता है कि अग्नि शीतल

है और आपका अनुभव कहता है कि अग्नि गरम है। तो आप अपने अनुभव को मानना परन्तु वेद को नहीं मानना। तो प्रश्न है—श्रेष्ठ कौन ? वेद या स्वयं का अनुभव। अनुभव को भी एक प्रमाण माना गया है। ऐसे ही कानून की दुनिया में साक्षी अर्थात् जिन्होंने वहाँ हाजिर रहकर अनुभव किया उनकी गवाही पर न्यायाधीश ज्यादा आधार रखते हैं। नौकरी में भी सिर्फ पदवीधर(Degree holders) नहीं परन्तु साथ में अनुभव हो ऐसे सब चाहते हैं। एक बार मधुवन में पटना की पार्टी अव्यक्त बापदादा को मिल रही थी। उन्होंने प्यारे बाबा के पास अर्जी रखी कि बाबा हमारे पास बड़ा सम्मेलन होने वाला है परन्तु वहाँ उसका कोई अनुभवी नहीं, इसलिये आप कोई अनुभवी बहन वा भाई को भेजो। मीठे बापदादा ने हंसकर पूछा 'क्या आप अनुभवी नहीं हो'। तो सबने कहा 'नहीं बाबा, हमें अनुभव नहीं है'। फिर से बाबा ने पूछा और सबने दोबारा 'ना' कहा। तब बाबा ने कहा 'बच्चे कल्प पहिले किसने किया था ?' तो सबने कहा 'हमने'। इस पर बाबा ने कहा 'बच्चे आपके पास तो कल्प-कल्प का ऐसा सुन्दर महोत्सव करने का अनुभव है। तो कल्प पहले की बात को फिर से याद करो और उसी अनुभव के आधार पर कार्य करो। प्राण बापदादा ने किसी भी अनुभवी बहन-भाई को वहाँ पहिले से तैयारी करने के लिये मददगार रूप में नहीं भेजा। पटना के सभी महारथी बहन-भाइयों ने सचमुच कल्प-कल्प के अनुभव के आधार पर बहुत ही सुन्दर अद्भुत कार्यक्रम का आयोजन किया। पटना के इस सुन्दर अनुभव के आधार पर हम सभी कल्प-कल्प का सतयुगी सृष्टि की स्थापना करने का अनुभव दोहरावें और कल्प पहिले अर्थात् कल का अनुभव समझकर पुरुषार्थ करें तो हमारा सतयुग की स्थापना का कार्य कितना आसान हो जाए ! एक अनोखी श्रद्धा तथा संकल्प में दृढ़ता आयेगी। क्योंकि कल्प-कल्प के हम अनुभवी हैं—ऐसा ज्ञान सृष्टि में किसी के पास भी नहीं है। कल्प-कल्प के अनुभव का ज्ञान हमें मास्टर त्रिकालदर्शी बनाता है और सभी प्रकार की समस्या के समय एक ढ़ाल समान बन जाता है। अभी जब भी कोई मंदिर, तीर्थ-स्थान या ऐसे यादगार स्थान पर जाते हैं तो वहाँ के जड़ चित्र या मूर्ति हम अनुभवी आत्माओं की यादगार है, ऐसा समझने से, ऐसी मस्ती का अनुभव कराता है जिसका वर्णन शब्दों से परे है।

प्यारे शिव बाबा भी कहते हैं—"बच्चे थोड़े समय के नहीं परन्तु बहुत समय के बाप समान गुण, कर्तव्य तथा इन्द्रियों के मालिकपन के अनुभवी बनो तो वहाँ भी बहुत काल के लिये राज्याधिकारी का अनुभव कर सकेंगे।" ज्ञान सबको एक का और एक समान है। योग, धारणा आदि भी सब वही करते हैं। परन्तु पुरुषार्थ के आधार पर अनुभव सबका अलग-अलग है। संगमयुग के अल्प समय में जो-जो बातें होवेंगी वह सारे कल्प में बड़े रूप में, बहुत समय के लिये अनुभव में आयगी। जो हर एक भव (जन्म में) काम में आयेगी, इसी बात का नाम है 'अनुभव'। इस भव-सागर में सच्चा मददगार तो है वर्तमान का अनुभव। मीठे ब्रह्माबाबा को बहुत समय अव्यक्त वतन में शिवबाबा के साथ रहने का अनुभव हो गया उसी कारण वे भी निराकार बाप समान गायन और पूजन के अधिकारी बने और इस ऊँची स्थिति का अनुभव प्राप्त करने का निमंत्रण बाबा सबको देते हैं। जो सच्ची अनुभवीमूर्त की स्थिति में सदा स्थित रहेगा उसकी निशानी क्या होगी, वह भी बाबा ने बताई है। बाबा कहते हैं उनके लिये (Nothing new) की स्थिति अर्थात् कोई बात नई नहीं होगी—कभी भी उनके मुख से आश्चर्य का भाव प्रगट नहीं होगा।

शास्त्रों में जो अनेक प्रकार की गीता है—उसमें से एक गीता है जिसका नाम है 'पाँडवगीता' जिसमें सभी कौरव-पाँडवों ने मृत्यु के बाद स्वर्ग में आपस में एक सम्मेलन(meeting) रखा और सभी ने कौरव या पाँडव नाम रूप से कर्तव्य करने से जो अनुभव पाया वह एक-एक श्लोक में वर्णन किया है। और उसी समय अर्जुन ने वह प्रसिद्ध श्लोक कहा है 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव' अर्थात् परमात्मा हमारा मात-पिता बंधु, सखा आदि है। शायद हम पाँडव-शिवशक्ति सेना ने विनाश के बाद और नये कल्प के लिये, वहाँ से अवतरित होने के पहिले, अव्यक्त वतन में ऐसे

अनुभव की लेन-देन का सम्मेलन किया होगा। बंबई में जब १९६९ में प्रथम अखिल भारतीय सम्मेलन 'बिरला क्रीडाकेंद्र' में हुआ था तब सम्मेलन की पूर्णाहुति के पश्चात सभी ने सम्मेलन से क्या अनुभव पाया वह बतलाने के लिये कहा। सभी ने अपना अनुभव बहुत ही सुन्दर शब्दों में रखा और ऐसे अनुभव की लेन-देन का कार्यक्रम सभी बड़े-बड़े कार्यक्रम के अन्त में हो तो बहुत ही अच्छा होगा, ऐसा अभिप्राय दिया।

मुझे अभी-अभी एक शहर में किसी ने पूछा कि आप सतयुग के बारे में लेख क्यों लिखते हो? तब मैंने वही बात फिर से बताई। पूना में (Indian History Congress के समय) अपने विश्व-विद्यालय द्वारा पंडितों और विद्वानों का सर्वेक्षण (Survey) किया था। सर्वेक्षण की प्रश्नावली में एक प्रश्न यह भी था कि गीता में वर्णित स्वर्ग सत्य है या कल्पना। उसके उत्तर में ८५% पंडित और विद्वानों ने लिखा था कि यह कल्पना है। तब यह संकल्प आया कि सतयुगी स्वर्ग जिसका हम सबको अनुभव है उसको विद्वान लोग क्यों कल्पना मानते हैं। तो क्यों नहीं हम ज्ञान एवम् अनुभव के आधार पर रचता की सर्वश्रेष्ठ सतयुगी दैवी सृष्टि को सिद्ध करें! स्वर्ग हमारे सभी भाई-बहनों का अनुभव है। तो यदि सभी अपने अनुभव के आधार पर लिखें या कहें कि स्वर्ग हमारा अनुभव है और आप इस अनुभव को कैसे कल्पना कहते हो? इसलिये इन लेखों द्वारा हमारे अनुभव को शब्ददेह देने का पुरुषार्थ किया है। इसमें कई बातें हम सभी के कल्प-कल्प के मिले-जुले अनुभव के आधार पर लिखी गई हैं। इसीलिये सतयुग और अनुभव यह सिर्फ़ एक लेख नहीं परन्तु सभी लेखों का सार है। हमारा लक्ष्य यही है कि सब ब्राह्मण कुल भूषण एक ही आवाज से कहें कि 'मीठे बाबा, सतयुगी स्वर्गीय वर्सा जो हम बच्चों ने आपसे पाया था वह हमारा अनुभव है'। स्वर्ग—यह परमपिता परमात्मा की सर्वोत्तम रचना है और यह आवाज जितना हो सके उतना बुलंद करके विद्वान, पंडित, वैज्ञानिक, नास्तिक आस्तिक आदि-आदि सबको सुनाना है। ●

गीत

ब्र० कु० मोहन, अमृतसर

कर्मयोग की करामात से, इस जग को बदलना है
अपने कर्मों के द्वारा, हमें कर्मयोग सिखलाना है

हर संकल्प में छुपी हो शिव बाबा की शान
हर कर्म से पहले हो मन में शिव का ध्यान
करुणा की किरणों से इस जग को चमकाना है
अपने कर्मों के द्वारा·····

नैनो में हो रूहानी दृष्टि, रूहों को करे भरपूर
मुख में हो मधुर वाणी, सबको दुःख से कर दे दूर
तपते हुए दिलों पे अब तो, दिव्य प्यार बरसाना है
अपने कर्मों के द्वारा·····

ऐसा अपना जीवन हों वियोगी बने सहयोगी
ऐसे अपने कर्म हो जन जन बने निरोगी
भटकी रूहों को फिर से, सत मार्ग दिखलाना है
अपने कर्मों के द्वारा·····

—:०:—

हर कर्म में सत्यं-शिवं-सुन्दरम भी होना चाहिये

(ले० ब्र० कु० सूरजप्रकाश, सहारनपुर)

कर्म तो करना मगर, याद यह रखना सदा।
हर कर्म में सत्यं-शिवं-सुन्दरम भी होना चाहिये॥

हम ब्राह्मण हैं चोटी, हमारी कसोटी है।
हर कार्य अपना श्रेष्ठ और, अनुपम भी होना चाहिये॥

देवता बनना है अगर तो, जीवन में हमारे सदा।
मधुरता, सरलता और, संयम भी होना चाहिये॥

अमरनाथ से अमरभव का, वरदान लेना है अगर।
तो प्रातः उठने का सदा, नियम भी होना चाहिये॥

साक्षीमूर्त बनकर, हर कर्म तो करे मगर।
सदा नैनो में बसा, प्रियतम भी होना चाहिये॥

अगर चाहते हो संगम का, एक पल भी न जाये व्यर्थ।
तो बुद्धि में इस युग का, महातम भी होना चाहिये॥

ज्ञान तो धारण करें, नित्य प्रति हम मगर।
योग से पापों का खाता, भस्म भी होना चाहिये॥

अपनी वृत्ति से बदल दे, सारे वायुमंडल को जो।
ऐसा पावरफुल आत्म-बम भी होना चाहिये॥

अगर चाहते हैं ज्ञान का तीर लग जाये किसी को।
तो मन-वचन में योग का पराकम भी होना चाहिये॥

वैर और कटुता से मुर्झा जाते हैं मन के चमन।
जिन्दगी में प्यार की सरगम भी होना चाहिये॥

भाव-स्वभाव से अगर हो जाते हैं मन में जख्म।
तो पास अपने ज्ञान का मरहम भी होना चाहिये॥

ईश्वरीय पथ पर, तूफान तो आयेंगे मगर।
तूफानों और विघ्नों का वैलकम भी होना चाहिये॥

दिलशिकस्त न हों कभी, मुश्किल न कुछ अनुभव करें।
पुरुषार्थ इतना सरल और सुगम भी होना चाहिये॥

माया तो आयेगी, अनेक रूपों से मगर।
हमको हिला सके न ये दम भी होना चाहिये॥

अगर चाहते हो खुशी का, पारा सदा चढ़ा रहे।
तो हर हाल में हमको बेगम भी होना चाहिये॥

ठीक है हमने जो पाना, था सो पा लिया मगर।
मन में अपने दूसरों का गम भी होना चाहिये॥

अनेक आत्मायें दुःखी, भटक रहीं जहान में।
उनके प्रति मन में रहम भी होना चाहिये॥

ज्ञान मार्ग में हम, उठाते हैं जो भी कदम।
वो चढ़ती कला में जावे का माध्यम भी होना चाहिये॥

योग-बल

ब्र० कु० योगीराज, मधुबन, माउण्ट आबू

आध्यात्मिक जीवन में रस भर देने वाला, परमात्मा का साथ मनुष्यात्मा के लिए एक अलौकिक बल देने वाला है। कलियुग के अन्त तक आते-आते, सृष्टि के सबसे शक्तिशाली दैवी कुल की महान आत्माएँ जब निर्बल होकर रावण की जेल में बन्द हो जाती हैं, तब सर्वशक्तिवान खुद आकर उनमें जागृति लाकर ईश्वरीय बल का बाण फूंकते हैं और वे आत्माएँ एक ही वार में रावण की जंजीरें तोड़कर जीवन्मुक्त हो जाती हैं।

यों तो मनुष्य आज तक अनेक प्रकार के योगों का अभ्यास करते आये हैं, परन्तु मानव रावण की जंजीरें न तोड़ सका। परन्तु परमात्मा द्वारा सिखाये गये "राजयोग" में इतना बल है, जो मनुष्य-आत्माएँ अपना खोया हुआ साम्राज्य फिर से प्राप्त कर लेती हैं। योग शब्द की शोभा ही "बल" है। आत्मिक बल में वृद्धि नहीं तो योग यथार्थ नहीं। सर्व शक्तिवान से बुद्धि योग असीम बल प्रदायक है। इतना बल जो मनुष्य सरल रीति से सभी कार्य सफल कर लेता है। संसार के असत्य को चुनौती देने का बल योग द्वारा ही प्राप्त होता है।

योग-बल की असंख्य गाथाएँ पुराणों को आकर्षक बनाये हुए हैं और इन्हीं कारणों से आज तक भी मनुष्य का झुकाव योग की ओर बना हुआ है। ऐसा समझा जाता रहा है कि किसी काल में योग द्वारा मनुष्य ने अनुपम सिद्धियाँ प्राप्त की थीं और योग-बल ही मानवता को अब आसुरता की ओर बढ़ने से रोक सकता है। इसके अतिरिक्त मानव-उत्थान का अब कोई भी रास्ता नहीं रह गया है।

परन्तु वह योग, जो कल्प के आदि में भगवान ने सिखाया था, जिसमें अथाह बल था, लोप हो गया था। वह कब व क्यों लोप हो गया और जब महर्षि पंतजलि ने योग का प्रतिपादन किया, क्या तब तक वह प्राचीन योग प्रचलित था? इन प्रश्नों को सुनकर विद्वान मौन रह जाते हैं। अवश्य ही उससे पूर्व ही वह सम्पूर्ण सत्य योग लुप्त हो गया होगा, तब ही तो महर्षि को योग की व्याख्या की आवश्यकता प्रतीत हुई। परन्तु वे उस प्राचीन योग को सम्पूर्ण स्वरूप नहीं दे सके और यही कारण है कि योग की बल के रूप में ख्याति धीरे-धीरे लोप होती गई और मानव का आकर्षण भौतिकता की ओर तीव्र गति से बढ़ा और आज तो योग का नाम मात्र ही रह गया है। स्वयं संन्यासी भी 'योग' को छोड़कर पूजा-पाठ में लग गये हैं जबकि संन्यासोपनिषद् में संन्यासी को देव-पूजन का अधिकार नहीं दिया गया है।

तो ऐसे समय में शिव ने आकर अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ की पुनः स्थापना की और आत्माओं को सम्पूर्ण सत्य व अति सरल राज-योग सिखाया। वह योग आत्माओं को अति बलवान बनाता है, मन-इच्छित फल देता है। यहाँ कुछ अनुभव युक्त, योग-महत्व पर प्रकाश डाला जाएगा।

एक घटना

पिता श्री ब्रह्मा बाबा के सम्पूर्ण स्वरूप धारण कर लेने के बाद इस रुद्र यज्ञ में अपनी सम्पूर्ण आहुति देने वाली कुछ बहनें १९६९ में यज्ञ के आरम्भ के कुछ अनुभव सुनाया करती थीं। शुरू में अर्थात् १९४०-५० के मध्य बाबा ने रात्री पहरे का काम बहनों को दिया था। लगभग ८ बहने पहरा देती थीं। परन्तु उन्हें नारी-स्वभाव अनुसार भय होता था। तो बाबा सदा एक बात कहा करते थे—"बच्ची, अगर तुम योग-युक्त रहेंगी तो कोई भी तुम्हारी चार

दिवारी के अन्दर घुसने का साहस भी नहीं करेगा।" ये बात केवल उन्हें धीरज देने के लिए या निर्भय बनाने के लिए नहीं थी, परन्तु सम्पूर्ण सत्य थी। यह बात सुनकर तब ही मेरी समझ में योग-बल का महत्व आ गया था।

अर्थात् अगर कहीं एक भी शक्तिशाली आत्मा योग-युक्त है, तो जहाँ तक उसके प्रकम्पन फैलेंगे, उतनी ही दूर तक कुछ भी अहित नहीं होगा। और अनुभव भी यही है कि पहरा केवल एक आत्मा नहीं देती बल्कि दूर तक फैले प्रकम्पन भी किले की रक्षा करते हैं।

योग-बल आत्मिक जागृति लाता है—

शिव बाबा ने योग सिखाकर नारी को शक्ति का स्वरूप प्रदान किया। जैसे जैसे योग-बल बढ़ता जाता है, आत्मा को स्वयं के सत्य स्वरूप की अनुभूति होती जाती है। बहुत काल से बसा आन्तरिक भय, अनर्थ की चिन्ता, भविष्य की चिन्ता समाप्त होती जाती है। और संसार में फैले असत्य व सामाजिक कुरीतियों को चुनौति देने का साहस जागृत होता है। क्योंकि किसी के भी उत्थान के लिए सर्व प्रथम आत्मिक जागृति की आवश्यकता होती है और जैसे-जैसे योग-अभ्यास बढ़ता है, आत्म-सम्मान में भी विलक्षण वृद्धि होती है।

योग-बल हर कर्म को प्रभावित करता है—

योग-बल अर्थात् दोहरा बल। अर्थात् एक आत्मिक बल और उसमें जुड़ जाता है परमात्म-बल। मनोवैज्ञानिक लोग भी इस सत्य को सिद्ध कर चुके हैं कि हर कर्म हमारी मानसिक स्थिति द्वारा प्रभावित होता है। अगर मन में अच्छे विचार हैं तो कर्म भी सरलता से सफल होगा और मन की उलझन कर्म को भी उलझा देगी। मगर मन में संकल्पों का प्रवाह बहुत कम है तो कर्म के काल पर भी प्रभाव पड़ता है। अर्थात् एक घण्टे में होने वाला कार्य आधे घण्टे में ही पूर्ण हो जाता है। और अगर इस आत्मिक स्थिति के साथ परमात्मा की याद भी है तो वह योग अति श्रेष्ठ बल देने वाला हो जाता है। जिससे होने वाले कर्म अति श्रेष्ठ व सफ़ल तो हो ही जाते हैं साथ-साथ कठिन व असम्भव कार्य भी सहज ही सम्पन्न हो जाते हैं।

सम्पूर्ण पवित्र बनने का बल—

मन की शक्ति का बहुत कम भाग ही कार्य में खर्च होता है, शेष शक्ति को अधिकतर लोग व्यर्थ ही कर देते हैं। योग-युक्त होने से वह शक्ति संग्रहित हो जाती है और आत्मा स्वयं को अति शक्तिशाली महसूस करती है। साथ ही साथ सर्वशक्तिवान से योग जोड़ने से शक्ति विद्युत करैन्ट की तरह आत्मा की ओर प्रवाहित होने लगती है और अगर आत्मा अपनी अशरीरी अर्थात निर्संकल्प स्थिति में है तो वह सम्पूर्ण शक्ति आत्मा में भर जाती है।

इस प्रकार योग से प्राप्त बल, आत्मा को कलियुग के इस दूषित, पाप युक्त वातावरण में भी सम्पूर्ण पवित्र बनने का बल प्रदान करता है। वास्तव में तो सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य ही योग-बल का प्रत्यक्ष फल व ज्वलन्त उदाहरण है। योग, आत्मा को इतना रस देता है कि विज्ञान के साधनों के मनोरंजन उसे नीरस लगते हैं। योग, मन को इतना सुख देता है जो साँसारिक वैभव दुःख का कारण भासते हैं। योग द्वारा मिला आराम तन, मन को वास्तविक स्फूर्ति देता है।

योग-बल व सांसारिक समस्याएँ—

"जो कार्य हम १०० संकल्प उठाकर करना चाहते हैं, योग-बल के इस सत्य की अनुभूति जिन आत्माओं को हो चुकी है, समस्याएँ उनको सिर दर्द नहीं बनती। योग-बल द्वारा दूसरों की शत्रुता को मित्रता में बदला जा सकता है। योग वह अग्नि है जो विघ्नों की दीवारों को सहज ही भस्म कर डालती है।

इसलिए विघ्न आने पर अपने योग-बल को भूलकर विघ्न स्वरूप नहीं बन जाना चाहिए। बल्कि अपनी शक्तियों का स्मरण कर उनका उपयोग अपने व दूसरों के विघ्नों को नष्ट करने में करना चाहिए।

दूर बैठी आत्मा को शान्ति देना —

हमें याद है जब अप्रैल १९६८ में दादा विश्व किशोर बम्बई में शारीरिक पीड़ा से बहुत पीड़ित थे तो उनके असह्य दर्द का समाचार सुनकर ब्रह्मा बाबा

ने सारी रात जागकर उन्हें योग-दान दिया था और अगले ही दिन फोन आया था कि दादा ने चैन से नींद की। तो योग द्वारा हम शान्ति के सागर से अथाह शान्ति लेकर किसी भी दूर बैठी आत्मा की ओर उस शान्ति का प्रवाह भेज सकते हैं। और उस आत्मा को शान्ति अवश्य महसूस होगी। ऐसे अनुभव हममें से कई योगी आत्माएँ करती रहती हैं। परन्तु इसके लिए यह आवश्यक है कि हमारा चित्त अधिक समय परम शान्ति के अनुभव में रहता हो।

कमजोर आत्मा को बल देना—

जैसे इस समय सूक्ष्म वतन में रहकर ब्रह्मा-बाबा व शिव बाबा अनेक कमजोर आत्माओं को बल देते हैं। वैसे ही हम भी इस स्थूल दुनिया में रहकर उन आत्माओं को बल दे सकते हैं जिन्हें माया को जीतने में कठिनाई महसूस होती है। बाबा वतन से अपने संकल्प के बल से रूहों को बल देते हैं और हम सर्व-शक्तिवान से बुद्धि को एकाग्र करके, शक्तियाँ ग्रहण करके उन शक्तियों के वेग का प्रवाह उन आत्माओं को ओर कर सकते हैं। ऐसे प्रयोगों से देखा गया है कि वे आत्माएँ स्वयं में शक्ति महसूस करती हैं और माया को जीतने का साहस बटोर पाती हैं। परन्तु जितनी शक्ति का संग्रह हमारे पास होगा उस अनुसार ही हम दूसरों को बल दे सकेंगे।

दूसरो आत्माओं को संकल्प पहुँचाना व सन्देश देना—

जब कोई आत्मा माया से युद्ध में विजय न देखते हुए निराशा की गहरी खाई में कूदने को होती है और उदास जीवन में दम घुटने लगता है तो योग-बल से सजी आत्मा अपनी श्रेष्ठ भावनाओं के संकल्प से उमंग व उत्साह के संकल्प से उस मूर्छित आत्मा में पुनः नव जीवन का संचार कर सकती हैं। ऐसे कई सफल प्रयोग किये गये हैं। हमारे दिये गये संकल्प, उन्हें उनके मन में उठने वाली दिव्य प्रेरणाएं अनुभव होती हैं जो उनके उन्नत जीवन का आधार बन जाती हैं, जैसे बाबा जब हमें संकल्प देते हैं तो वे हमें हमारे मन में उठने वाली दिव्य प्रेरणाओं के रूप में प्राप्त होते हैं।

इसी प्रकार अपनी श्रेष्ठ स्थिति द्वारा बाबा का सन्देश हम रूहों तक पहुँचा सकते हैं। परन्तु हमारे संकल्प दूसरों तक उस गति से पहुँचते हैं जितना योग बल व पवित्रता हमारे पास होती है। परन्तु अगर योग-बल कम भी है तो भी पवित्र आत्माओं के संकल्प दूसरों को प्रभावित अवश्य ही करते हैं।

दूसरों के संस्कारों को परिवर्तन करना—

इसी प्रकार अगर कोई आत्मा, अपने किसी कड़े संस्कार को परिवर्तन करने में असफल होती है तो योग-सम्पन्न आत्मा अपनी शुभ भावनाओं का व शक्तियों का सहयोग द्वारा उनके संस्कारों को सरल कर सकती है। हमारी शक्तिशाली वृत्ति इस कार्य में विशेष भूमिका निभाती है।

दूसरों को सत्यता का अनुभव कराना—

जैसे हम सभी अनुभव करते हैं कि अव्यक्त बाबा के सामने जाते ही हमें अपनी कमियों का या विशेषताओं का सत्य अनुभव होने लगता है, हम अपनी गलतियों को सहज ही स्वीकार कर लेते हैं। उसी प्रकार अगर हमारे पास अत्याधिक योग-बल है तो हम उन आत्माओं को जो इस सत्य ईश्वरीय ज्ञान को स्वीकार नहीं करतीं, इसकी सत्यता स्वीकार करा सकते हैं। हमारे सत्य ज्ञान के अनुभव के दिव्य प्रकम्पन उनके असत्य ज्ञान के प्रकम्पनों को समाप्त कर देते हैं और वे सत्यता से प्रभावित अवश्य होते हैं। अगर हम बिना योग-बल के ही ज्ञान का वाद-विवाद करते हैं तो हम सत्य को स्वीकार नहीं करा सकते। इसके अनुभव हमें विद्वानों से वार्तालाप करते हुए होते हैं। ज्ञान वार्तालाप में हम वाद-विवाद का रूप बनकर अत्तेजित न हो जाएं बल्कि आत्मिक दृष्टि रखकर, धैर्यता व शान्ति से श्रेष्ठ शब्दों का प्रयोग करते हुए वार्तालाप करें। तथा ज्ञान चर्चा करते हुए हमारा सम्पर्क, ज्ञान-दाता ज्ञान सागर से बना रहे। तब हमें हमारी सेवाओं में असाधारण सफलता मिलेगी और वह दिन दूर नहीं जबकि योग-बल से युक्त आत्माओं के समक्ष विश्व के सभी विद्वानों को आत्म समर्पण करना पड़ेगा, अपनी हार स्वीकार करनी पड़ेगी।

भगवान से स्पष्ट वार्तालाप—

जितना हमारा योग अधिक होगा, उतनी ही बुद्धि भी दिव्य व स्वच्छ होगी। और उतनी ही अपने परम पिता से आनन्द दायक स्पष्ट वार्तालाप होगा। हम शिव बाबा के इशारों को स्पष्ट समझ सकेंगे। भगवान से बात करने का आनन्द कैसा होगा—यह भक्तों की कल्पना ही रही। इन ईश्वरीय वार्तालापों से हमारा मन सदा ही अतीन्द्रिय सुखों से ओत प्रोत रहने लगेगा।

योग-बल द्वारा ही सम्पूर्ण फरिश्ता

संसार यह देखकर दाँतों तले अँगुली दबायेगा कि मनुष्य फरिश्ते बनकर आकाश में उड़ रहे हैं और तब ही हम फरिश्तों को समस्त संसार अपने रक्षक के रूप में स्वीकार करेगा। हम भगवान के फरिश्ते होंगे। परन्तु यह स्थिति श्रेष्ठ योग-बल का ही परिणाम है। जो सिद्धि आज तक किसी को भी प्राप्त नहीं हुई, वह हमारा—"फरिश्ता स्वरूप" समस्त विश्व यहीं पर देखेगा। योग-बल द्वारा ही हम भक्तों को साक्षात्कार करा सकगे। क्योंकि फरिश्ता अर्थात जिसका समस्त विकर्मों का बोझ समाप्त हो गया हो जो योग द्वारा ही सम्भव है। जब योग-बल द्वारा आत्मा सम्पूर्ण पवित्र बन जाएगी अर्थात अंग-अंग शीतल हो जाएगा तब जहाँ हमारा मन पहुँचेगा वहीं हमारा सूक्ष्म शरीर भी दिखाई देगा। तब इस अन्तवाहक शरीर द्वारा अति तीव्र गति से सेवा होगी। कुछ आत्माएँ अभी भी इस तरह के अनुभव कर रही हैं।

योग-बल द्वारा विश्व को नई दिशा—

योग-बल द्वारा सहज ही समस्त विश्व को प्रकाशित किया जा सकता है। योग द्वारा जैसी चाहें, वैसी तरंगे संसार में प्रवाहित कर सकते हैं। और वो दिन दूर नहीं, जबकि योग-बल वाली आत्माएँ संसार में सूर्य के समान सभी के आकर्षण का केन्द्र बनेंगी और विश्व को नई दिशा देंगी।

"योग-बल व प्रकृति जीत"

योग-बल से युक्त आत्मा प्रकृति पर अपना पूर्ण अधिकार कर लेती है। ये अनेक राजयोगियों के अनुभव हैं कि प्रकृति उनके हर कार्य में सहयोगी बन जाती है। हर समय अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करती है। इतना ही नहीं, सर्व आत्माएँ भी ऐसी योग युक्त आत्मा की सहयोगी बन जाती हैं। प्रकृति को दासी बनाना केवल योग-बल द्वारा ही सम्भव है। भले ही आज विज्ञान ने कितनी भी उन्नति की हो, परन्तु मानव प्रकृति का दास बन गया है। जबकि योग-बल से प्रकृति पर पूर्ण रूपेण नियन्त्रण हो जाता है। विज्ञान भौतिक साधनों द्वारा प्रकृति पर नियन्त्रण चाहता है, परन्तु वह अभी तो प्रकृति को पूर्णतया जान भी नहीं पाया है। वैज्ञानिकों को शायद ही यह मालूम हो कि जड़ प्रकृति, मनुष्य की मनोस्थिति से प्रभावित होती है। और कुछ श्रेष्ठ आत्माएँ ही अपने श्रेष्ठ मनोबल से प्रकृति पर अधिकार कर सकती हैं। परन्तु केवल साधनों द्वारा नियन्त्रण के प्रयास से प्रकृति क्रुद्ध ही हुई है और उसका परिणाम होगा प्राकृतिक विस्फोट अर्थात् महा विनाश। तत्पश्चात् प्रकृति शान्त होगी और मनुष्य की पूर्णतया सेवा करेगी, सुख-शान्ति प्रदान करेगी।

योग-बल व स्वर्ग का तख्त

विश्व पर या स्वर्ग पर राज्य करने की क्षमता केवल उन ही आत्माओं में होती है, जिन्होंने योग-बल द्वारा अपनी मन, बुद्धि व सम्पूर्ण कर्मेन्द्रियों पर शासन कर लिया हो। चाहे विज्ञान कितनी भी भयानक युद्ध सामग्री उपलब्ध करा दे, परन्तु कोई भी राष्ट्र समस्त विश्व का नियन्ता नहीं बन सकता।

शिव-बाबा ने स्वयं ही योग सिखाकर मनुष्यात्माओं को इतना बलवान बनाया है जो वे स्वर्ग का तख्त जीत लेंगे और उनके राज्य में कोई आसुरी लक्षण वाला व्यक्ति प्रवेश भी नहीं कर सकेगा। क्योंकि वे आत्माएँ स्वयं ही अपने योग-बल से विश्व में दैवी साम्राज्य की स्थापना कर रही हैं और उस दैवी राज्य में केवल योग-बल वाली मनुष्यात्माओं को ही प्रवेश मिलेगा।

योग-बल व निर्लिप्त स्थिति—

यद्यपि आत्मा निर्लेप नहीं है परन्तु योग-अभ्यास

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

विश्व-भ्रातृत्व

ब्र० कु० चक्रधारी,
शक्ति नगर, दिल्ली

प्यारे बच्चो, आज संसार में भाई-भाई आपस में लड़ रहे हैं। एक देश दूसरे देश के विरुद्ध अधिक-से-अधिक प्रभावशाली अस्त्रों-शस्त्रों का संग्रह कर रहा है। एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध अपनी सेनाओं को लैस कर रही है। शिव बाबा ने इस सृष्टि को फूलों का बगीचा बनाया था परन्तु आज वह कीकर और बबल के काँटों वाला जंगल बन गया है। इसी प्रसंग में एक छोटा-सा आख्यान मुझे याद हो आता है :

कहानी अफ़गानिस्तान देश से सम्बन्धित है। एक माँ के चार बेटे थे जो व्यापार करने, आसपास के देशों में चले गए। जब तक वे छोटे थे, उनका परस्पर प्यार बना हुआ था। वे खेलते-कूदते, हँसते-बहलते और मौज उड़ाते रहते थे और उनके वो दिन खूब खुशियों में बीत गये। परन्तु जैसे-जैसे वे बड़े हुए, वैसे-वैसे उनमें अपनी अपनी मिलकियत बनाने का भाव बढ़ता गया और वे एक दूसरे से स्वयं को अधिक योग्य, बल शाली और प्रतिष्ठावान मानने लगे। परिणाम यह हुआ कि वे एक-दूसरे की बात मानने की बजाय स्वार्थ और हेकड़ी के कारण परस्पर झगड़ा-झड़प करने लगे और उनमें नफरत बढ़ने लगी। होते-होते उन्होंने एक-दूसरे से बात करना भी छोड़ दिया और मिलना-जुलना भी बन्द कर दिया। उनकी माता को यह चिन्ता हो गई कि अब इनका मेल-मिलाप कैसे हो और वे एक-दूसरे के समीप कैसे आयें। उसने पहले कई बार कोशिश कर ली थी परन्तु उसे सफ़लता नहीं मिली। और अब तो वह बीमार भी रहने लगी थी तथा वृद्धावस्था से पीड़ित थी। उसका मुख निस्तेज था, चेहरे पर झुर्रिया पड़ गयी थीं, हाथों की नस-नाड़ियाँ उभर आई थीं, बाल तो सफ़ेद हो ही चुके थे, दृष्टि मन्द पड़ती जा रही थी, अब सुनाई कम देने लगा था, दाँत अपना ठिकाना छोड़ चुके थे और अब उसे लगता था कि एक झटका लगेगा और यह शरीर धराशायी हो जाएगा तथा प्राण पखेरू हो जाएँगे। अतः रह-रहकर उसे यही ख्याल आता था कि इस देह के कब्र दाखिल होने से पहले ये नैन अपने प्रिय पुत्रों को एक-साथ स्नेह से मिलकर बैठते हुए देख लें। बस उसके जीवन में एक यही आशा बाकी रह गई थी। वह ठण्डे सांस लेते हुए प्रायः मन में सोचा करती कि हे प्रभु, बस इस बुढ़िया के इस शुभ संकल्प को पूरा करना।

आखिर उसे एक युक्ति सूझी। उसने अपने सभी पुत्रों को एक स्नेह-भरा पत्र लिखा। उसमें उसने कहा—"ऐ मेरे लख्त-ए- जिगर[1], मेरे नूरे चश्म[2], मेरे दिल की मुराद, मेरे घर के चिराग, मेरे जीवन की कली, मेरे फ़रज़ंद[3]-अर्जमंद[4], तुम इतने होनहार हो कि मेरा जीवन तुम पर निसार (न्यौछावर) है। अब यह आखिरी चिट्ठी तुम्हें इस ख्याल से लिख रही हूँ कि तुम्हें बाद में शिकवा न रहे कि माँ ने पैगाम न भेजा। अब मैं इस दुनिया में चन्द दिन की मेहमान हूँ। किसी भी दिन हवा का एक झोंका आएगा और मुझे

१. जिगर के टुकड़े
२. आँखों के नूर
३. बच्चे
४. आज्ञाकारी

उड़ाकर ले जाएगा और फिर तुम मुझे देख नहीं सकोगे। इस बुढ़ापे में मेरी एक ख्वाइश बाकी है जिसे तुम लायक बच्चे ही पूरा कर सकते हो। वह यह कि इन आँखों के बन्द होने से पहले मैं तुम्हारी खुशनुमा सूरत देख लेना चाहती हूँ और तुम्हें अपने सीने से लगा लेना चाहती हूँ। तुम अगर माँ की इस मुराद को पूरा करना चाहो तो इस चिट्ठी को पाते ही फौरन चले आओ।

मेरे लाडलो,
मैं हूँ आप पर नाज करने वाली,
आपकी माँ

इस चिट्ठी को पाते ही उसके बेटे मन में माँ का प्यार लिये तीव्रतम वेग वाले वाहन से माँ के निवास की ओर निकल पड़े। माँ का प्यार ही चारों में एक साझी चीज रह गई थी जो उनको मिला सकती थी और जिस पर उन सभी का हक था। माँ का प्यार उन सभी के लिए बराबर था और सबसे ज्यादा खींचने वाला था। माँ के वात्सल्य की बातें उनके मन में जाग उठीं। आखिर वे माँ के पास आ पहुँचे। माँ उन्हें देखकर खुशी से फूली नहीं समाती थी और उन्हें भी माँ के निकट आने से अपने बचपन के भूले हुए दिन फिर से याद आ रहे थे।

माँ ने उन चारों को कहा – कि "आपके आने से आज मेरे जीवन की पतझड़ में भी बहार आ गई है और मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं है। उसी खुशी में प्यार से मैं आपके लिए वह पुलाव बनाऊँगी जिसे आप बचपन में बहुत प्यार से खाते थे। और उसमें खूब घी डालूंगी, सब तरह के मेवे डालूँगी और आप चारों को एक थाली में खाता देखकर, जानते हो, मुझे कितनी खुशी होगी। कई वर्षों से मैं भगवान से दुआ करती थी कि मेरे चारों लाल इकट्ठे बैठकर खाना खायें और इनका परस्पर प्यार बढ़े। खुदा का शुक्र है कि जिन्दगी की आखिरी रात में उसने मेरी वो दुआ कबूल की और आप सब यहाँ आ पहुँचे। मेरे प्यारे बेटों, आज मैं तुम्हें परस्पर प्रेम से देखते हुए इकट्ठे खाना खाते हुए देखना चाहती हूँ। बोलो, माँ की यह मुराद पूरी करोगे ? करोगे न ?,'

सभी बेटों ने देखा कि माँ के नैन गीले हो रहे हैं और उसके होंठ प्यार से बेकाबू होकर हिल रहे हैं। उनकी गरदन झुक गई। वे माँ की बात सुनकर भला 'न' कैसे कह सकते थे। सभी ने कहा—हाँ माँ। सभी के मन भर आये थे, भाव नरम हो गये थे और वे माँ के प्यार की बाढ़ में बह गये थे।

माँ ने बड़े प्यार से पुलाव बनाकर एक बड़ी थाली में डालकर उनके सामने लाकर रख दिया। रात का वक्त था। उस कमरे में वही दिया जल रहा था जिस दिये की रोशनी में इकट्ठे बैठकर वे रात को पढ़ा करते थे। लगता था कि ये दिया भी पूरा हो चला है और वह भी अपनी मौन भाषा में टिमटिमाकर 'खा लो, खा लो' 'एक हो जाओ, एक हो जाओ' कह रहा है। एक-दूसरे के प्रति अब उनके भाव बदलते जा रहे थे। दिये की रोशनी आज उनके मन में भी रोशनी पैदा कर रही थी। वे पुरानी दीवारें और सामने लगा हुआ उनके पिता का चित्र, सभी उन्हें जतला रहे थे कि आखिर तुम भाई हो, सहोदर हो, एक माँ-बाप के बच्चे हो। इसको भुलाना सच्चाई के खिलाफ जाना है। अगर इतने बड़े होकर तुम अपनी माँ की एक बात भी पूरी नहीं कर सकते तो और क्या कर सकते हो। जिस माँ ने तुम्हें जन्म दिया और पाला, अगर उसकी बात भी तुम नहीं सुन सकते तो तुम सचमुच में बहरे हो। इस प्रकार के वातावरण में, माँ की पुचकार और दुलार को सुनकर सबने चम्मच हाथ में लिया और खाने के लिए तैयार हो गये। परन्तु फिर भी वे आपस में बोलते नहीं थे, एक-दूसरे की ओर आँख उठाकर प्रेम से देखते नहीं थे, एक-दूसरे की ओर बढ़कर प्रेम के हाव-भाव प्रगट नहीं करते थे और एक-दूसरे को खाना शुरू करने के लिए कहते भी नहीं थे।

सन्नाटा छाया हुआ था। उनको चुप-चुप देखकर माँ बोली—"मेरे कान तुम्हारी मीठी आवाज सुनना चाहते हैं। जैसे तुम बचपन में हंसते और बहलते थे, आज मेरी जिन्दगी के आखिरी क्षणों में तुम कुछ बोलते क्यों नहीं।"

यह सुनकर उनमें से एक बोला—"माँ, बात भी भला क्या करूँ?देखो, फलाँ मौके पर इसने मेरे से यह

किया और फलाँ अवसर पर इसने इस तरह से बात की, फिर ऐसा हुआ, फिर यह हुआ, फिर वह हुआ।" जब वह इस तरह से बात कर रहा था तो हर बार 'यह हुआ', 'वह हुआ' 'ऐसा किया'—इन शब्दों का प्रयोग करते समय वह अपने चम्मच से थाली में पड़े पुलाव में पड़े हुए घी को अपनी तरफ खींच रहे थे।

उसको देखकर दूसरा कहने लगे—भाई, उस मौके पर आपने भी तो ऐसा किया, ऐसा कहते हुए वह घी अपनी ओर खींच लेता।

इसी प्रकार तीसरे और चौथे ने भी किया।

उनकी ऐसी बात को ताड़कर माँ ने एक चम्मच लेकर, सब मिला दिया। अच्छा अब तो पिछली बातों को भुलाकर सब एक हो जाओ। माँ की इस चाल को देखकर सब एक साथ हंस पड़े। वे समझ गये कि माँ ने हमारी नीयत को जान लिया है। सब खिलखिला उठे और हंसते हुए चेहरों से एक-दूसरे की ओर देखने लगे। इससे उनका मन का मैल धुल गया और वे सब प्रेम से खाने लगे। उनमें एकता की भावना पैदा हो गई और वे एक-दूसरे को भाई चारे की निगाह से देखने लगे। माँ का मन यह देखकर खुशी से पुलकित हो उठा।

प्यारे बच्चों, यही कहानी इस विषय की कहानी भी है। धरती माता के सब लाल पहले भारत में रहते थे और सतयुग, जो कि उनकी बाल्यावस्था थी, में वे परस्पर खेलते-कूदते, खुशियाँ मनाते और स्नेह पूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। समय गुज़रता गया और एक दिन ऐसा आया कि जब यहाँ के लोग देश देशान्तर को निकल गये और वहाँ जाकर आबाद हो गये। वे अपने-अपने देश अथवा राष्ट्र को बड़ा बताने लगे, दौलत बढ़ाने लगे और भूमि व सत्ता के बटवारे को लेकर अपने को दूसरे से अधिक बलशाली और योग्य मानते हुए हेकड़ी भी जमाने लगे और इसके फल-स्वरूप लड़ाई-झगड़ा, फ़ितना-फिसाद बढ़ता गया। यह दुनिया जो फूलों का बगीचा थी, कीकर और बबल के काँटों का जंगल-सा बन गया। आज ऐसी ही हालत है। आज यह धरती माता सबको पुकार कर कह रही है कि कलियुग का अन्त आ चुका है, मैं बूढ़ी हो चली हूँ। मेरे जीवन के अन्तिम क्षण है, मैं अब तुम्हें एक देखना चाहती हूँ। ये हमें खाने पीने के पदार्थ देती है, हम इन्हें इकट्ठे मिलकर सेवन करें और हंसते हुए चेहरों से एक-दूसरे की ओर देखें।

"ज्ञानामृत"

(ले० ब्र० कु० रछपाल, मोहाली—चण्डीगढ़)

"ज्ञान-सागर की याद दिलाता है, ये ज्ञानामृत,
ज्ञान-रत्न ख़ज़ाने लाता है, ये ज्ञानामृत,
बुद्धि का योग लगाता है, ये ज्ञानामृत,
संकल्पों को शुद्ध बनाता है, ये ज्ञानामृत,
उमंग, उत्साह में लाता है, ये ज्ञानामृत,
सेवा में रुची बढ़ाता है, ये ज्ञानामृत,
नयनहीन को राह दिखाता है, ये ज्ञानामृत,
बापदादा से प्रीति जुटाता है, ये ज्ञानामृत,
सच्ची लगन की अग्नि जलाता है, ये ज्ञानामृत,
हम सबके मन को भाता है, ये ज्ञानामृत।"

बच्चों प्रति

(ले० ब्र० कु० शीला, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली)

प्यारे बच्चो धारण कर लो,
मीठे गीता ज्ञान को।
योग लगाओ बनो देवता,
तजो देह अभिमान को।
हम सब हैं भाई बहन,
झूठ बोलना पाप है।
सत्य सुनना, सत्य सुनाना, सत्य देखना,
कर देता निष्पाप है।
एक बात है सबसे ऊँची,
तुम्हें बताती बाद में।
बनकर रहो पवित्र निरन्तर,
शिव बाबा की याद में।

विनाश की भयानक तैयारियाँ

ले०—ब्रह्माकुमारी ऊषा, गामदेवी, बम्बई

आज कई मनुष्यों को ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा विश्व परिवर्तन और विनाश की बातें सुनकर आश्चर्य होता है तो कइयों के मन में अनेक प्रश्न भी उठते हैं। लेकिन ब्रह्माकुमारी बहनें तो परमपिता परमात्मा की श्रीमत् के आधार पर होने वाले विश्व परिवर्तन की बात ही सबको बताती हैं ताकि मनुष्य पहले से ही सावधान हो जाए। जैसे कहावत है कि बाढ़ आने के पहले ही किनारा कर लें उसी प्रकार हम पहले से ही सावधान हो जाएं इसीलिये यह सावधानी दी जा रही है। यह बातें भय उत्पन्न करने के लिये नहीं बल्कि समझ से, पूर्व सूचना अनुसार हम स्व-परिवर्तन का कार्य अर्थात् नर से नारायण बनने का तीव्र पुरुषार्थ करें इसलिये बताई जाती हैं। इसी लक्ष्य से ब्रह्माकुमारी बहनें यह कार्य कर रही हैं। विनाश की तैयारियों के बारे में, प्रसिद्ध अमेरिकन मैगज़ीन "टाइम" के २९-३-८२ के अंक में जो बात छपी है तथा अन्य पुस्तकों में भी आज तैयारियाँ कहाँ तक पहुँच चुकी हैं इसके बारे में समाचार छपे हैं, वे कल्पना नहीं है लेकिन वास्तविकता है। इस बात को सर्व पाठकों के ध्यान पर लाने के लिये यह लेख 'ज्ञानामृत' में प्रकाशित किया है। १९८२ वर्ष में इस विषय पर करीबन ४० पुस्तकें छप रही हैं। उसमें से लेखक भ्राता रोजर मोलंकर की "अणुयुद्ध—उसका तुम्हारे साथ क्या सम्बन्ध है" नामक लिखित पुस्तक विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने अणुयुद्ध के भयंकर परिणामों से लोगों को सावधान करने हेतु एक ग्राउंड ज़ीरो नामक सार्वजनिक संस्था स्थापन की है।

थोड़े समय पहले बंबई में अमेरिकन वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिकों आदि द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (Conference) हुआ था। जिसमें वहाँ आए हुए एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ्रांक काप्ता (जो बंबई में स्थित ब्रह्माकुमारी सेन्टर पर दादी जानकी से मुलाकात हेतु आये थे) आदि ने शान्ति स्थापन हेतु हस्ताक्षर इकट्ठा करने की मोहीम शुरू की थी। मालूम नहीं इसका क्या उद्देश्य था। पूछताछ के बाद पता चला कि "साल्ट-ए" का संधि करार अमेरिका और रशिया के बीच प्रस्थापित होने में निष्फलता के कारण, इस संबंध में जागृत-मनुष्यों का एक बड़ा अमेरिकन समूह शांति स्थापना हेतु तथा अणुयुद्ध का भय दूर करने के लिये प्रयत्न कर रहा है। इसी कार्य के लिये आज अमेरिका में अनेक संस्थाएं स्थापन हुई हैं। भारत में तो इन बातों के विषय में इतना अज्ञान है कि ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा इस विषय में हो रहे पुरुषार्थ को लोग साशंक दृष्टि से देखते हैं। यदि इस बात के लिये भारत के विद्वान, अज्ञान निद्रा से जागृत हो कुछ कार्य करें तो कितना अच्छा हो? अमेरिका में तो चर्च आदि धर्म संस्थाएं भी शान्ति स्थापना के लिये प्रयत्नशील हैं। भारत के धर्म नेताएं भी, एक मत हो, शांति के लिये कुछ पुरुषार्थ करें, यही हमारी शुभेच्छा है।

शांतिकरार के लिये रशिया के ब्रेझनेव ने सुझाव रखा था लेकिन उस करार के लिये अमेरिका तैयार नहीं था। क्योंकि उन्हें डर है कि रशिया ने १९७९ वर्ष में १०० केन्द्रों में लक्षभेधि मिसाइल्स रखे थे और आज तो वे ३०० से भी अधिक केन्द्रों पर केन्द्रित किये गये हैं। इसलिये अमेरिका भी पीछे रहना नहीं

चाहता ? अंशित अणुयुद्ध की दरखास्तें आज भी होती हैं लेकिन दोनों पक्षों को यह मान्य नहीं है क्योंकि दोनों जानते हैं कि यदि इस करार पर हस्ताक्षर हो भी गये तो भी वे सिर्फ कागज पर ही रहेंगे। क्योंकि एक बार अणुयुद्ध शुरू हो जाए फिर तो वह अंशित रह नहीं सकता बल्कि वह आखरी दाव हो ही जायेगा। इसी कारण अमेरिका के राष्ट्र प्रमुख रीगन, प्रजा का उत्साह बढ़ाने के लिये, घोषणा करता है कि अमेरिका सिर्फ अणु युद्ध लड़ ही नहीं बल्कि जीत भी सकता है।

प्रेसीडेंट रीगन के साथ जो मुख्य चार अंगरक्षक रहते हैं उनमें से एक के हाथ में एक काली और मोटे चमड़े की बैग (बायें हाथ में) सदा रहती है। यह बैग चौबीस घंटा राष्ट्र प्रमुख के नजदीक रहनी चाहिए। यहां तक कि उसे नीचे रखने का भी आर्डर नहीं है। इस बैग को "फुटबॉल" के नाम से जानते हैं। उसके अंदर युद्ध क्षेत्रों को सूचना देने के साधन तथा गुप्त शब्दों में लिखे हुए कागज होते हैं। यह गुप्त शब्द जैसे ही यंत्र द्वारा बोलने में आते हैं वैसे तुरन्त ही अमेरिका में जहाँ लक्षबेधी बामब्स तैयार रखे हैं ऐसी १०५२ जगह पर संदेश पहुँचता है। और साथ-साथ यूरोप के आस पास पन्द्रह जितनी सबमेरीनों के संचालकों को भी वह सन्देश मिलेगा। इन गुप्त संदेश के शब्दों को भी समय प्रति समय बदली करते रहते हैं। थोड़े समय पहले बदले गये गुप्त शब्द इस प्रकार थे—टांगो, इको, ब्रेवो, रोमिओ, नोवेंबर (Tango Echo, Brevo, Romeo, Novenber) यह गुप्त सन्देश स्वतः प्रमुख रीगन या तो उनके द्वारा निमित्त बनाये गये खास प्रतिनिधि देवे कि तुरन्त ही हरेक केन्द्र के मुख्य नियंत्रकों को टेलीफोन, रेडियो या टेलीटाइप द्वारा संदेश मिल जाता है। गुप्त सन्देश के शब्दों को हरेक स्थान के कमान्डर तथा उनके साथी उनके पास हुए उस प्रकार के शब्दों को पहले मिलाते हैं। जैसे ही वह शब्द समान सिद्ध हों वैसे ही अपने पास रखी हुई तिजोरी खोलते हैं, कि जिसका नम्बर के प्रमाण चाबी डालते ही ढक्कन खुलता है, जो दोनों ही साथ में खोलते हैं। दोनों के पास अलग-अलग संकेत वाली चाबी होती है और वह जब दोनों साथ मिलाकर खोले तब ही तिजोरी खुल सकती है। उस तिजोरी में भी गुप्त शब्द वाले संकेत लिखे रहते हैं। उसके साथ मिले हुए सन्देश के शब्दों को मिलाते हैं और जैसे ही दोनों समान सिद्ध हुई वैसे तुरन्त ही दो अलग-अलग चाबियों से, जिसके द्वारा उसके अन्तर्गत में रहे हुए अणुशस्त्रों को फोड़ सकें, तिजोरी में से निकाल जिस अनुसार सन्देश में कहा हो, उस अनुसार और उतने ही शस्त्र छूटें, ऐसी चाबी घुमाते हैं।

सदा अणुशस्त्रों से सजी ऐसी पन्द्रह सबमेरीन भी, उनको सन्देश मिलते ही, अणुशस्त्र छोड़ती हैं। कई स्थानों पर अणुशस्त्रों को ले जाने के लिये हवाई जहाज (Aeroplanes) भी रखे हुए हैं। विमान चालक भी संदेश मिलते ही तैयार हो तुरन्त अपने हवाई जहाज को रशिया के तरफ उड़ाता है। कई समझते हैं कि राष्ट्र प्रमुख के पास एक बटन है जिसको दबाने से ये संदेश इत्यादि दिये जाते हैं। लेकिन ऐसी कोई बात नहीं है किन्तु जितना हो सके उतनी ज्यादा से ज्यादा सलामती (Sofety) और उच्च अधिकारी शामिल हो सके ऐसा प्रबन्ध है। सिर्फ एक राष्ट्र प्रमुख भी गलती न कर बैठे उसका भी ख्याल रखा जाता है। भूतपूर्व राष्ट्र प्रमुख रिचार्ड निक्सन जब एक मानसिक द्विविधा (वाटरगेट प्रकरण) में उलझे हुए थे उस समय वहाँ के मिलिटरी सत्ताधीशों ने फरमान निकाला था कि इस विषय में राष्ट्र प्रमुख द्वारा जो भी आज्ञा मिले वह यथार्थ है या नहीं उस पर सर सेनापति की मंजूरी बिना आगे कदम उठा नहीं सकते। रशिया में भी ऐसी ही तैयारी प्रमुख ब्रेझनेव तथा उनके साथियों ने की है।

अमेरिका के पास १९७२ वर्ष में ५७८० अणुशस्त्र थे और आज १९८२ वर्ष में ९४८० अणुशस्त्र हैं, जबकि रशिया के पास २५०० अणुशस्त्र थे और आज ८०४० हैं। अमेरिका के पास अणुशस्त्रों की संख्या ज्यादा है किन्तु ताकत कम है। अमेरिका की शक्ति ३५०५ मेगॉटन है जब कि रशिया की ७८६८ मेगॉटन की है। और जब यह बाम्ब फूटेगा तो क्या होगा ? जब यह फूटेंगे तो धरनी रूपी छप्पर उड़ जायेगा और जिस ओज़ोन नामक गैस के आवरण से

पृथ्वी सूर्य से आते अल्ट्रा वायोलेट किरणों से बची हुई है, वह भी खत्म हो जायेगी, ऐसा जोनाथन शेल नामक एक लेखक ने अपने "पृथ्वी का भविष्य (The fate of the earth) पुस्तक में लिखा है। कई फिर समझते हैं कि पृथ्वी, जो कि एक ग्रह है, वह ही नहीं रहेगा, उसके कण-कण हो आकाश में फैल जायेंगे। अमेरिका के राष्ट्रप्रमुख जिनके पास अभी ६४८० अणुशस्त्र हैं उसे बढ़ाकर २५००० करना चाहता है ताकि युद्ध में उसका वर्चस्व बना रहे।

यदि रशिया अणुशस्त्र छोड़ने में अगुआ (Takes Lead) होता है तो उसकी खबर मिलते ही अमेरिकन राष्ट्रप्रमुख को करीब तीस मिनट की अवधि मिलेगी। उसमें से पन्द्रह मिनट ऊपर बताई हुई विधि करने में जायेंगे और बाकी पन्द्रह मिनिट शस्त्र छोड़ने में लगेंगे। रशिया के समीप छिपाई हुई पन्द्रह सबमेरीन में से यदि सिर्फ दो द्वारा भी शस्त्र छोड़े और वे निश्चित स्थल पर गिरे तो उससे रशिया के तीन करोड़ व्यक्ति चन्द मिनिटों में मृत्यु पायेंगे।

वर्तमान अणुशस्त्रों की शक्ति बताते हुए कई लेखक लिखते हैं कि एक मेगॉटन अर्थात् जो हम दीपावली के समय दारु-गोला फोड़ते हैं ऐसे दस लाख टन दारू-गोले के बराबर है। एक हाइड्रोजन बाम्ब करीब पचास मेगॉटन शक्ति का होता है। एक मेगॉटन शक्ति का बाम्ब यदि देहली के पुरानी देहली स्टेशन के पास ६००० फुट की ऊँचाई पर फूटे तो पहले ही सेकंड में उस स्थान से २½ मील के वर्तुलाकार में रहने वाले सर्व अंधे हो जायेंगे इतना प्रचंड प्रकाश फैलेगा। और दूसरे ही सेकंड पर हुए धड़ाके से सर्व मृत्यु पायेंगे। २½ मील के आगे के तीन मील के वर्तुलाकार में रहने वाले लोग थोड़े ज्यादा क्षण जिंदा रहेंगे? मकान घास की तरह जलने और टूटने लगेंगे। अग्नि, ताप, प्रकाश और मकान आदि के टूटने के कारण वे लोग भी थोड़े क्षणों में मृत्यु पायेंगे। इस प्रकार पहले वर्तुल में बीस मील घेरे के लोग खत्म होंगे तो दूसरे वर्तुल में करीब ३३ मील घेरे के विस्तार में सर्व नष्ट होंगे। इससे भी आगे करीब १६० मील की गति से पवन, आंधी, तूफान आदि होंगे। आठ मील ऊँची ज्वालाएं चारों ओर से घेर लेंगी। और तीसरे वर्तुलाकार में करीब १५० मील में धन, संपत्ति तथा व्यक्तियां या तो नष्ट होंगी या अत्यन्त भयानक क्षति पाई हुई होंगी जिनकी सेवा के लिये न दवाई और न डॉक्टर ही होंगे और वे आखिर मृत्यु ही पायेंगे लेकिन अत्यन्त दुःखी होकर। ऐसे एक मेगॉटन बाम्ब से ही करीब २०३ मील के वर्तुलाकार विस्तार में विनाश हो सकता है। और अभी बने हुए हाइड्रोजन बाम्ब की क्षमता ५० मेगॉटन है। ऐसे ११३७३ मेगॉटन जितनी सामग्री विनाश के लिये तैयार है और इसके अतिरिक्त १५५२० मेगॉटन की सामग्री अमेरिका तैयार कर रहा है। तो जरूर है कि रशिया भी अपनी सामग्री उसी प्रमाण में बढ़ायेगा।

अमेरिका सिर्फ अणु-शस्त्र बनाने में ही आगे नहीं है परन्तु उसका उपयोग करने में भी आगे रहना चाहता है। मिले हुए तीस मिनिट में यदि सावधानी से तैयारी पूर्ण न भी हो सके तो भी अनेक स्थलों पर रखे हुए शस्त्रागारों में से सिर्फ चार सबमरीनों में रखे हुए एक-एक के सोलह जितने भी अणुशस्त्र छोड़े तो भी रशिया के हर बड़े स्थान का विनाश हो सकता है।

यह युद्ध कैसे शुरू होगा इस बारे में भी लेखक वर्ग अनुमान लगाता है। दूसरे विश्व युद्ध में तो नाज़ी और जापानी सेनाओं ने एक क्षण में सोये हुओं को घेर लिया। लेकिन पहले विश्व युद्ध में जैसे एक के बाद एक समस्या आती गई ऐसे ही दिन प्रतिदिन परिस्थितियाँ बिगड़ती जायेंगी—ऐसे लेखक वर्ग समझता है। दोनों ही शक्तिशाली सत्ताएं अपना कदम पीछे हटाना नहीं चाहतीं। इसी कारण दबाव बढ़ता जायेगा और इसी उत्तेजना में लड़ाई का कदम उठा लेंगे ऐसा लेखक मानते हैं। थोड़े वर्ष पहले रडॉर (Radar) यंत्र ने उदय होते चंद्रमा को रशियन बाम्बर विमान समझ झूठी सूचना दी थी। ऐसे ही काम्प्यूटर ने आकाश में उड़ते गिद्धों के झुंड को रशियन विमान बताया था। और एक बार तो यंत्र में कुछ खराबी के कारण झूठे संकेत मिले थे। १९७९ वर्ष में अमेरिका ने पांच वक्त झूठे संकेतों के कारण

(शेष पृष्ठ ३० पर)

सम्पादक के नाम पत्र

महोदय,

अभी पिछले दिनों पोप जॉन पाल II इग्लैंड गये थे। इतिहास का अध्ययन करने वाले सभी लोग जानते हैं कि लगभग ४०० वर्ष पूर्व जब हेनरी VIII का इंग्लैंड में शासन था तब से इंग्लैंड रोमन चर्च के विरुद्ध प्रोटेस्टेंट मत की चुनौती में अग्रगामी रहा है। अतः इतनी लम्बी अवधि के बाद पोप का इंग्लैंड में जाना और वहाँ आर्कबिशप ऑफ केन्टरबरी के साथ प्रार्थना में शामिल होना एक महत्त्वपूर्ण वृत्तान्त है। परन्तु पोप की इस विदेश यात्रा का समाचार पढ़कर मेरे मन में दो प्रश्न उठ खड़े हुए। जब मैंने समाचार पत्रों में उसका एक फोटो देखा जिसमें कि वह हवाई जहाज़ की सीढ़ियों से उतरते ही पृथ्वी पर झुककर इंग्लैंड की भूमि को चूम रहा था, मेरा एक प्रश्न तो तब उठा। मुझे आश्चर्य हुआ कि पोप यह सब क्यों कर रहा है ! यह तो एक प्रकार की 'भूमि पूजा' है। क्या ईसाई मत में इस प्रकार की पूजा को सैद्धान्तिक रूप में स्वीकृति दी गई है ?क्या यह भौतिकवाद है या अध्यात्मवाद ? ईसाई मत में तो यह कहा गया है कि जो इस मत के अनुयायी हों वे एक पारलौकिक परमपिता परमात्मा की ही प्रार्थना किया करें। तब पोप ने भला ऐसा क्यों किया होगा ? फोटो को देखने से मालूम होता है कि स्वयं आर्कबिशप ऑफ केन्टरबरी, जो वहाँ हवाई अड्डे पर पोप का स्वागत करने आये थे, भी पोप के इस कृत्य को देखकर आश्चर्य-चकित हैं और कुछ धीमो-सी मुस्कुराहट लिये हुये हैं।

दूसरा प्रश्न जो मेरे मन में उठा, वह यह था कि पोप इंग्लैंड में जब गये तब इंगलैंड और आरजेन्टीना में युद्ध हो रहा था, परन्तु पोप अपना कोई नैतिक प्रभाव नहीं डाल सके कि जिससे उन दो देशों में लड़ाई रुक जाती। इसकी बजाय उन्होंने यह कहा कि वे अर्जेन्टीना देश में भी जायेंगे और उन्हें भी 'आशीर्वाद' (Blessings) देंगे। मुझे यह समझ नहीं आता कि आज धर्म का प्रभाव इतना कम क्यों हो गया है। मुझे लगता है कि आज 'आशीर्वाद' आदि शब्द निरर्थक हो गये हैं और धर्म केवल एक रूढ़ि अथवा एक प्रथा बनकर रह गया है।

ईश्वरीय सेवा में,
पूनम, जयपुर

महोदय,

४ जून को लाल किला मैदान में मुख्य रूप से जैनियों की एक सभा को सम्बोधित करते हुए श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने कहा कि देश की एकता के लिए तथा सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए धर्म एक मुख्य साधन बन सकता है। उन्होंने कहा कि यदि धर्म में लोगों का विश्वास बना रहे और वे उसके सिद्धान्तों का अनुकरण करें तब समाज की तरक्की की गति तीव्रतर हो सकती है। आगे उन्होंने यह भी कहा कि आज विज्ञान और तकनीकी में मनुष्य इतने बढ़ गये हैं कि वे एक-दूसरे की सहायता करके बहुत-सी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं परन्तु इसकी बजाय वे परस्पर लड़ने की तैयारियों में लगे हुए हैं।

प्रधानमंत्री के भाषण के इस अंश को पढ़कर मुझे प्रसन्नता हुई परन्तु खेद इस बात का है कि यद्यपि वे इस बात को मानती हैं कि धर्म से मनुष्य में नैतिक साहस बढ़ता है और समाज की उन्नति होती है तो भी उन्होंने धर्म की उन्नति के लिए अभी तक कोई कदम नहीं उठाया।

इसके अतिरिक्त जब वे कहती हैं कि धर्म सबको मिलाने वाली एक शक्ति है, तब प्रश्न उठता है कि ऐसा धर्म कौन-सा है ? आज यही बात तो लोग नहीं जानते कि पवित्रता और शान्ति रूपी स्वधर्म ही एक मात्र ऐसा धर्म है जो मनुष्य-मनुष्य में एकता ला सकता है।

भवदीय
योगेश, बम्बई

महोदय,

इण्डियन इन्जिनीयरिंग इन्डस्ट्री एसोसिएशन ने पिछले दिनों जो आँकड़े इकट्ठे किये हैं, उसमें बताया गया है कि सन् १९८१ में हड़तालों और कारखाना बन्द के कारण २२०.५६ लाख मानव दिनों की हानि हुई है। यह बड़े खेद की बात है कि भारत जैसे एक प्रगतिशील परन्तु गरीब देश में इतने अधिक दिनों का हड़तालों के कारण नुकसान हुआ। इससे देश को २९६.९९ करोड़ सम्पत्ति की हानि हुई है। क्या ही अच्छा हो कि हड़तालें बन्द हो जायें और उसकी बजाय लोगों में परस्पर स्नेह, सहयोग और विचार विमर्श द्वारा समस्याओं का समाधान करने की भावना पैदा हो। इसके लिए केवल एक यही तरीका है कि सब एक-दूसरे को आत्मा-आत्मा भाई के नाते से देखें और मिलें।

दूसरे वे एक-दूसरे के प्रति कटु भाषा और हठ के तरीकों को छोड़ दें और उसकी बजाय एक-दूसरे के समीप आयें।

तीसरे, वे इस नीति वचन को अपनायें 'हम बदला नहीं लेंगे, बदलकर दिखायेंगे।' यदि मिल मालिक और मजदूर दोनों उपरोक्त तीनों सूत्रों पर दृढ़ रहने का समझौता कर लें तो फिर आपस के किसी विवाद को हल करना कठिन नहीं रहेगा। इस प्रकार की नीति को प्रचलित करने के लिए ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय ने एक प्रदर्शनी बनाई है। कारखाना दारों और श्रम-जीवियों, दोनों ने उसकी प्रशंसा की है।

जगरूप, देहली

महोदय,

१० जून को जब अमरीका के प्रधान रोनल्ड रीगन बर्लिन में गये, तो उन्होंने वह दीवार भी देखी जो पश्चिमी और पूर्वी बर्लिन को अलग करती है। वहाँ जो सफेद रेखा खिंची हुई है, उसके निकट वो लगभग ५ मिनट तक खड़े रहें और कहा यह रेखा उतनी ही भद्दी है जितना इसके पीछे वह विचार जिसके कारण यह लगाई गई है। बाद में जब वे जर्मनी में ठहरी हुई अमरीकन फौजों को सम्बोधित कर रहे थे तो कहा कि वे एक बोतल में एक प्रश्न लिखकर डाल देंगे और उस बोतल को वे उस दीवार के दूसरी ओर फेंकेंगे। उन्होंने कहा कि मैं उनका इस विषय में यह जवाब जानना चाहता हूँ कि ये दीवार क्यूँ बनाई गई। वे दीवार के इस ओर के लोगों की स्वतन्त्रता से इतने भयभीत क्यों हैं?

जब मैंने इस समाचार को पढ़ा तो मेरे मन में प्रश्न उठा कि जिसे अमरीका के प्रधान स्वतन्त्रता कह रहे हैं, क्या वह सही मानों में स्वतन्त्रता है?

आज हम देखते हैं कि लोग स्वतन्त्रता की अलग अलग प्रकार से व्याख्या करते हैं परन्तु सच्ची स्वतन्त्रता की जो परिभाषा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय ने की है, मुझे वह सर्वोपरि लगती है। यहाँ यह कहा गया है कि मनुष्य माया अर्थात ५ विकारों का गुलाम बन चुका है। वो हानिकारक वृत्तियों के प्राधीन और परतन्त्र है। अतः राजयोग द्वारा इस परतन्त्रता की बेड़ियों को काटना ही सच्ची स्वतन्त्रता प्राप्त करना है। परन्तु आज पश्चिमी देश स्वतन्त्रता की जो परिभाषा करते हैं उससे तो संसार में स्वच्छन्दता बढ़ी है और यह विश्व हिंसा प्रधान बन गया है और यहाँ की संस्कृति पतनोन्मुख हो गई है। सच्ची स्वतन्त्रता तो वह है जिससे एक मनुष्य में दूसरे के प्रति घृणा न हो और मनुष्य समाज निर्धनता, अस्वच्छता और मानसिक प्रदूषण से मुक्त हो। वास्तव में इसे ही जीवन्मुक्ति कहा जाता है। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का लक्ष्य ऐसी ही स्वतन्त्रता को स्थापन करना है।

मदनलाल, जयपुर

महोदय,

भारत के औषधि आयुक्त (Drug Controller) की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि हर पाँच औषधियों में से एक औषधि नकली है। जिन दवाइयों का विदेशों से गुप्त आयात होता है, उनकी हालत तो और भी खराब है। ऐसा समाचारों से तो लगता है कि मनुष्य का नैतिक पतन परम सीमा पर पहुँच चुका है। यह धर्म ग्लानि ही का एक चिह्न है कि मनुष्य दवा जैसी चीजों में भी मिलावट करता है और उसकी नकल करता है।

आनन्द, बम्बई

"भाग्य और भाग्य-विधाता"

(ब्र० कु० आत्मप्रकाश, मधुबन, आबू)

सृष्टिचक्र के आदिकाल में ब्रह्मादेव ने जब भाग्य बाँटा उस समय जो हाजिर थे वह भाग्यशाली बने और जो नहीं थे वह भाग्यहीन बन गये। लेकिन ब्रह्माजी ने मनुष्यात्माओं को भाग्य कब और कैसे बाँटा इससे सभी अनभिज्ञ हैं। भाग्य बना बनाया होता है, भाग्य की रेखाएं कोई मिटा नहीं सकता— ऐसी कईयों की मान्यता है। आखिर किसने आत्माओं के भाग्य की तस्वीर बनाई यह गुह्य रहस्य जानने योग्य हैं।

कौन है ये चित्रकार

भगवान विचित्र शिव ही भाग्य विधाता हैं जो ब्रह्मा द्वारा भाग्य बाँटते हैं। उसने सभी को समान भाग्य बाँटा अर्थात् भाग्य निर्माण की विधि सभी को एक जैसी ही बताई। परन्तु अपने-अपने पुरुषार्थ से आत्माओं ने भिन्न-भिन्न भाग्य पाया।

भागीरथ व भाग्य विधाता

भागीरथ ब्रह्मा और भाग्य विधाता शिव का अटूट व घनिष्ठ सम्बन्ध है। ब्रह्मा ने अपना रथ भी शिव को दे दिया, इसलिए उसे भागीरथ की संज्ञा मिली और फलतः सर्वश्रेष्ठ भाग्य उसे ही प्राप्त हुआ और उसके द्वारा अनेकों ने भाग्य पाया। भागीरथ ने न केवल भाग्य विधाता को अपना रथ दिया बल्कि मन व सम्पूर्ण धन भी दिया।

भाग्य कब बाँटा

सतयुग से सभी आत्माएँ अपने-अपने भाग्य का उपभोग करते हुए जन्म लेते हुए जब कलियुग के अन्त तक पहुँच जाती हैं तो उनका सम्पूर्ण भाग्य समाप्त हो जाता है। उनका तन, मन, धन सब जर्जर हो जाता है, तब कलियुग के अन्तिम काल में भाग्य विधाता पुनः आकर भाग्यवान बनाते हैं। इस कल्याणकारी काल को जो आत्माएँ पहचान लेती हैं, उनसे भाग्यशाली चारों युगों में और कोई भी नहीं होता।

सबसे बड़ा भाग्य

चारों युगों में एक ही काल आता है जबकि आत्माएँ परमात्मा को मिलती हैं। अगर यह मिलन न होता तो परमात्मा से मिलने की इच्छा क्यों होती? और वे मनुष्य सबसे भाग्यशाली हैं जो भगवान को मिलते हैं। अतः सबसे बड़ा भाग्य भगवान की प्राप्ति है। न केवल भगवान की प्राप्ति बल्कि भगवान से अपने सर्व सम्बन्ध जोड़ लेना। और इसके बाद आत्मा को सर्व भाग्य सहज ही प्राप्त हो जाते हैं।

भाग्यशाली कौन ?

दुनिया में भाग्यशाली मनुष्य कौन होते हैं— पहले तो वह बुद्धिवान हो, सन्तान श्रेष्ठ हो, धन पर्याप्त हो, मन में सुख-शान्ति हो, चरित्र आदर्श हो और ये सभी प्राप्तियाँ हज़ारों वर्षों के लिए परमात्मा आकर कराते हैं।

सबसे भाग्यशाली वह है जो सुहावने संगमयुग के हर सेकेंड में परमप्रिय परमात्मा शिव की याद द्वारा अनेक पदमों की प्राप्ति करके समय के ख़ज़ाने को सफल करता है। जो शिव बाबा की याद में मग्न रहकर बुद्धि द्वारा परमधाम निवासी या सूक्ष्मवतन-वासी बनता है वह सदा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलता है। बाबा की याद रूपी छत्रछाया में रहने से माया की धूप से सुरक्षित अनुभव करता है।

सबसे भाग्यशाली वह है जिसने कर्मों की गुह्य-गति जानकर श्रेष्ठ कर्म करने की कला को प्राप्त किया है। क्योंकि श्रेष्ठ कर्मों के आधार पर भाग्य की रेखाएँ चढ़ती कला की ओर जाती हैं। भाग्य की तस्वीर

उच्चतम बनती है।

भाग्य क्या है ?

वैसे तो सर्वश्रेष्ठ भाग्य है—स्वर्ग के राज्य की प्राप्ति और वर्तमान में सम्पूर्ण शान्तिमय व आनन्दित जीवन। परन्तु अगर गहराई से देखा जाए तो भाग्य का विश्लेषण हम इस प्रकार भी कर सकते हैं—कि सतयुग से उतरते-उतरते हमारी सम्पूर्ण आत्मिक-शक्ति समाप्त हो चुकी है, अब उस शक्ति को पुनः बढ़ाना माना भाग्य को बढ़ाना है। अब जानना यह है कि वह शक्ति कैसे-कैसे बढ़ती है। वही विधि है श्रेष्ठ भाग्य बनाने की।

भाग्य बनाने की विधि

जो चढ़ेगा बलि, वही है भाग्यशाली

भक्त लोग काशी कलवट खाते हैं और समझते हैं अगर हम शिव लिंग पर बलि चढ़ेंगे तो जन्म-जन्मान्तर के पापों से मुक्त होकर स्वर्ग में जाएँगे। वास्तव में संगम युग में आत्माएँ शिव बाबा को पहचान कर तन, मन, धन सम्पूर्णतया स्वाहा करते, वही अनेक जन्मों के पापों से मुक्ति पाकर भविष्य सतयुगी दुनिया में जाने के हकदार बनते हैं क्योंकि "बलिहार ही भगवान का सच्चा उपहार है।"

जो लगाएगा तं लि, वही है भाग्यशाली

पुराने स्वभाव संस्कार, अनेक जन्मों के पापों के बोझ को दृढ़ संकल्प की तीलि लगाने से आत्मा कंचन अर्थात् पवित्र बनती है। और आत्मा वर्तमान तथा भविष्य में भाग्यशाली बनती है।

जितना रहेंगे देह से न्यारा, उतना चमकेगा भाग्य सितारा

तमोप्रधान पाँच तत्वों से बनी हुई देह भी तमोप्रधान बनती है। पतित देह की स्मृति से आत्मा पतित अर्थात् आत्मा की चमक कम होती जाती है। तो जितना हम आत्माएँ देह की स्मृति से परे रहकर आत्मिक स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करते उतना ही इस पुरानी देह, पुरानी दुनिया से ममत्व समाप्त होता है और अविनाशी ज्ञान सूर्य शिव बाबा की तथा अविनाशी घर की स्मृति आती है। फलस्वरूप हमारे भाग्य का सितारा चमकता जाता है।

पवित्र आत्माएँ ही भाग्यशाली

वास्तव में संगम पर शिव बाबा से जो पवित्रता का पहला वरदान मिलता है, उसे जो आत्माएँ सम्पूर्ण रीति से प्राप्त करती हैं वही भविष्य में सम्पूर्ण राज-भाग की प्रालब्ध पाने के अधिकारी बनते हैं। और पवित्रता के आधार पर ही वैजयन्ति माला के मणके नम्बरवार बनते हैं। पवित्रता की शक्ति के आधार से ही आत्माएँ स्वराज्य और विश्व का राज्य का संचालन करती हैं। संगम पर अपवित्रता जैसे कि श्राप है।

"जितनी पवित्रता, उतनी उच्चता"

योगी व सहयोगी ही भाग्यशाली

संगमयुग में सहजयोगी बनना ऊँचे भाग्य की निशानी है क्योंकि योग द्वारा ही परमात्मा से सर्व खजाने प्राप्त कर आत्मा भरपूर बनती है। और योग द्वारा ही जीवन में योग्यताएँ आती हैं। विश्व-कल्याण के कार्य में जितने हम एक-दो को सहयोग देते हैं तो अनेक आत्माओं के दिलों पर राज करके भविष्य में ऊँच भाग्य प्राप्त करते हैं।

त्याग और भाग्य

भाग्य बनने का आधार त्याग ही है इसका ज्वलन्त और स्पष्ट उदाहरण ब्रह्माबाबा का है। जब ब्रह्मा को निश्चय हुआ कि शिवबाबा मेरे द्वारा नई दुनिया की स्थापना करना चाहते हैं तो झट से अपना तन, मन और धन शिवबाबा पर समर्पित किया। और उस त्याग के आधार से नम्बर वन भाग्य पाने के अधिकारी बने। बाबा कहते हैं **"जो त्यागे, सो आगे"** तो जितना हम देह के भान का त्याग, पुराने स्वभाव संस्कार, पुरानी दुनिया के वैभवों का त्याग करते उतना ही ऊँचे भाग्य को पाते हैं।

पुरुषार्थ और भाग्य

कई पुरुषार्थी "यह अविनाशी ड्रामा हूबहू पाँच हजार वर्षों के बाद रिपीट होता है" इस बाबा के महावाक्य का उल्टा अर्थ लेते हैं। कहते हैं ड्रामा में जो भाग्य नूंध होगा वही मिलेगा, फिर पुरुषार्थ करने की क्या जरूरत है। परन्तु हमें याद रहे कि जो भाग्य

(शेष पृष्ठ २४ पर)

(लघु नाटक)

काम महाशत्रु है

ब्र० कु० अमर चन्द्र गौतम, सहपऊ (मथुरा)

पात्र—('ब्रह्मा कुमार देव' और उसके ही खानदानी, एक विद्वान काका जगन्नाथ जो अपना पण्डिताई का काम भी करते हैं।)

जगन्नाथ काका—देव बेटा ! आज तुमसे कुछ जरूरी बात करने आया हूँ !

ब्र० कु० देव—आइये काका जी ! ओम शान्ति, बैठिये !

(देव काकाजी को आदर पूर्वक विनम्रचित से घर में बाबा की याद के लिये बने गीता पाठशाला जैसे वातावरण के कमरे में बैठा देता है। कमरे में त्रिमूर्ति, गोला, झाड़, सीढ़ी व युगल लक्ष्मी नारायण के चित्र सहित सभी प्रमुख चित्र लगे हैं)

काका—मैं कई दिन से सोच रहा था कि समय मिले तो तुम्हारे पास बैठूं। पर इस गृहस्थ जीवन में अवकाश कहाँ ? पर हाँ बेटा ! मैंने सुना है कि तू शादी करने के लिए मना करता है ?

ब्र० कु० देव—(काकाजी की ओर एक रूहानी दृष्टि से देखता है)

जगन्नाथ काका—अरे बेटा ! राम ने शादी की, कृष्ण ने शादी की यहाँ तक कि बड़े-बड़े ऋषियों तक ने भी शादी की, और फिर मनुष्य को पितृ ऋण तो चुकाना ही पड़ता है। नहीं तो उसका उद्धार ही न होगा। पदम पुराण में लिखा है—धर्मार्थ कामं सममेव सेव्यं धर्म अर्थ काम का सम भाव से सेवन करो !

ब्र० कु० देव—काकाजी ! पवित्र रहना मनुष्य जीवन का प्रथम परम कर्तव्य है।

काका—बेटा ! मैं कुछ समझा नहीं ?

देव—काकाजी ! आप जो नित्य गीता पाठ करते हैं उसमें 'भगवानुवाच' है ना ?

काका—हाँ बेटा।

देव—गीता में भगवान ने स्पष्ट कहा है कि 'काम नरक का द्वार है। वह मनुष्यात्मा का महाशत्रु है। हे अर्जुन तू इस पर विजय प्राप्त कर !' स्वयं भगवान के महावाक्य हैं।

जगन्नाथ काका—(श्लोक पढ़कर) जहि शत्रु महा बाहो काम रूप दुरासदम्···हाँ बेटा है जरूर परन्तु कामी होना बुरा है काम बुरा नहीं, नहीं तो यह सृष्टि कैसे चलेगी ?

ब्र० कु० देव—काकाजी ! चीनी और मिठास क्या अलग-अलग हैं ? देखो काकाजी, जहाँ चीनी होगी तो मिठास जरूर होगा। गुणी और गुण अलग-अलग नहीं हो सकते। कामी और काम अलग-अलग नहीं हैं।

जगन्नाथ काका—सभी लोग ऐसे सोचें तो यह सृष्टि कैसे चलेगी ?

ब्र० कु० देव—काकाजी ! आप राम के जन्म को, हनुमान के जन्म को या कृष्ण के जन्म को कैसे हुआ मानते हैं ?

जगन्नाथ काका—अरे बेटा, ये तो भगवान थे, गीता में है कि मैं अपनी योग माया को अधीन कर जन्म लेता हूँ।

ब्र कु० देव—काकाजी, आप ठीक कहते हैं परन्तु एक समय में भगवान तो एक ही होगा न ?

जगन्नाथ काका—हाँ बेटा।

ब्र० कु० देव—फिर काका ! राम के अलावा उनके भाई लक्ष्मण, शत्रुघ्न और सेवक हनुमान तो भगवान नहीं थे ? उनका जन्म भी आप काम से हुआ नहीं मानते। और भी महाभारत कालीन ऐसे अनेक हैं जिनका जन्म काम से न होकर अन्य विधियों से हुआ, जिसमें कोई तो सरकन्डे से पैदा हुआ तो कोई

सूर्य से, तो अन्य हवन कुण्ड की अग्नि से निकला। फिर आप कैसे कह सकते हैं कि यह सृष्टि काम विकार से ही होती आई है। क्या इसके लिये कोई दूसरा रास्ता नहीं हो सकता ?

काका—(थोड़ी देर चुप रहकर)—पहले जन्म ऐसे ही होते होंगे परन्तु बेटा पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन तो सन्यासियों के लिये ही बताया है और तुम उस मार्ग पर जाते मालूम नहीं पड़ते ? नौकरी कर रहे हो, घर पर रहते हो, यह तो संन्यासियों के भी लक्षण नहीं हैं। फिर तो तुम्हें किसी मन्दिर या आश्रम पर होना चाहिये था।

ब्र० कु० देव—हाँ काकाजी ! सर मुंडाकर, या लम्बे बाल बढ़ाकर, रंग-बिरंगे कपड़े धारण कर, किसी मठ या मन्दिर में बैठकर गाँजे या सुल्फे की चिलम लगाने वाले, बिना मेहनत किये, दूसरों के अन्न पर जीवन निर्वाह करने वाले संन्यास के लिये मेरे हृदय में कोई स्थान नहीं।

जगन्नाथ काका—(चौंककर) अरे मैंने इधर तो ध्यान ही नहीं दिया तुमने अपने सतगुरु श्री श्री १०८ श्री सोऽहँ जी महाराज एवं बाबा बसन्तगिरि एवं हठयोग के पूज्य श्री श्री १०८ स्वामी नित्य अखण्डानन्द सरस्वती महाराज के चित्र यहाँ से कहाँ हटा दिये ? (चित्रों की ओर देखकर) यह लक्ष्मी नारायण तो बहुत ही सुन्दर हैं। (ज्योति स्वरूप परमपिता शिव परमात्मा के बड़े चित्र को देखकर पढ़ता है) प्रेम के सागर हैं जन्म मरण से न्यारे हैं—परम पिता, परम शिक्षक व सदगुरु हैं ! (स्वतः ऐं ! शिव, गीता ज्ञान दाता ! क्या मतलब ?)

(इसी बीच ब्र० कु० देव प्यारे शिव बाबा की मीठी याद में स्थित होकर धीमे और धीरे कहता है।)

ब्र० कु० देव—हाँ काकाजी ! सच्चा गीता ज्ञान निराकार शिव परमात्मा ही ब्रह्मा श्री मुख से हर कल्प में संगम पर ही देते हैं। गीता में जो संम्भवामि युगे-युगे है वह यही संगम-युग होता है। जिस ज्ञान की ही धारणा से श्री कृष्ण विश्व महाराजन श्री नारायण और राधे विश्व महारानो श्री लक्ष्मी बनती हैं। जहाँ ही १००% सुख शान्ति होती है।

जगन्नाथ काका—बेटा, यह तो बड़ी रहस्य युक्त गुह्य बात मालूम होती है।

ब्र० कु० देव—हाँ काकाजी, यह सात दिन की सत्यनारायण की सच्ची सप्ताह यज्ञ कथा है। आप नित्य यहाँ ही आकर अपनी संध्या कर लिया करें तो सत्संग भी हआ करेगा और सभी रहस्यों से आप परिचित हो जायेंगे।

जगन्नाथ काका—यहाँ आकर मुझे तो बहुत अच्छा लगा, आना सार्थक हुआ अब मैं अवश्य आया करूँगा !

ब्र० कु० देव—अच्छा काकाजी !

(जगन्नाथ काका का स्वतः अति धीमे स्वर में यह कहते हुए धीरे-धीरे प्रस्थान) "मैं यहाँ क्या सोच कर आया था ? परन्तु क्या-क्या लेकर जा रहा हूँ। इस लड़के का क्या जादू सा असर हुआ है ! वास्तव में ब्रह्माकुमारों के पास सच्चा परमात्मा का दिया ज्ञान मालूम होता है। अब तो अवश्य रात में आकर इससे सत्संग-ज्ञान लाभ लिया करूँगा !" □

(भाग्य और भाग्य विधाता—पृष्ठ २१ का शेष)

बना-बनाया था वो तो हमने खाकर खत्म कर दिया, अब आगे के लिए श्रेष्ठ भाग्य बनाने के लिए हमें श्रेष्ठ पुरुषार्थ करना है। अगर हम भाग्य के भरोसे हाथ-पर-हाथ रखकर ही बैठे रहेंगे तो खाली हाथ हो रह जायेंगे। अतः समय व भाग्य विधाता को पहचानकर अपने उच्चतम भाग्य निर्माण में लग जाना चाहिए—

अब नहीं तो कभी नहीं।

भाग्य विधाता का आदेश

भाग्य विधाता शिव पिता कहते हैं—हे लाडले वत्सो, "इस सुहावने संगमयुग की एक-एक अमूल्य घड़ी को सफल करके अपने भाग्य को उज्ज्वल बनाओ"। अपने भाग्य की तसवीर जैसी भी बनाना चाहो अब ही बना सकते हो। अगर यह अमूल्य घड़ियाँ व्यर्थ गँवाओगे तो अन्त में पश्चाताप की अग्नि में जलना पड़ेगा।

पा लो अभी जो भी कुछ पाना है
वर्से का जन्म-सिद्ध अधिकार।
बीत जाएगी ये अन्तिम घड़ियाँ
फिर पछताओगे बार-बार॥□

पौधे की प्रेरणास्पद आत्म-कथा

लेखक—ब्र० कु० बाबू लाल शर्मा, हाथरस (अलीगढ़)

अमृतवेले की स्वर्णिम घड़ियों में बाबा की कुटिया की ओर से प्रवाहित···हृदयस्पर्शी शीतल समीर और उसके समीप प्राकृतिक सौन्दर्य को अपने रोम-रोम में समाये हरियाली की अनोखी छटा विकीर्ण करती लहलहाती हरी-हरी घास की पत्तियों की गोद में बैठा हुआ मैं योग की गहन अनुभूतियों में खोया हुआ था। प्रभु प्रेम से ओतप्रोत मेरे मन से ये शब्द निकल पड़े—"अहो प्रभु,आपकी कमाल है,आपके इस उपकार को मैं किन शब्दों में वर्णन करूँ—मैं तो केवल आपकी एक झलक पाने की ही चाह रखता था लेकिन आज आपसे सन्मुख मिलन मनाते मेरा मन गद्‌गद् हो रहा है। आपकी एक दृष्टि पाने की मेरी इच्छा मात्र को आपने मुझे अपना बच्चा बनाकर आजीवन मिलन मनाने का पैत्रिक अधिकार प्रदान किया है। आपने अपने वास्तविक स्वरूप की पहचान देकर तथा मुझे मेरे सत्य परिचय से अवगत कराकर, मेरी सर्व भ्रान्तियों को समाप्त कर दिया है—। दूसरे शब्दों में मैं इस शरीर से भिन्न अविनाशी सत्ता आत्मा अनुभव करते तथा आप विश्व पिता परमात्मा शिव की सन्तान अनुभव करने से मैं स्वयं को ईश्वरीय विरासत—पवित्रता सुख शान्ति से सम्पन्न अनुभव कर रहा हूँ।"

ऐसी स्नेहमयी सुख दायिनी योगस्थिति के मध्य प्यारे प्रभु से रूहरूहान करते मेरे रोम-रोम में खुशी भर गयी। मैं अपने श्रेष्ठ तकदीर एवं ब्राह्मण-जीवन को स्मरण कर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर रहा था। साथ ही स्वयं को सृष्टि मंच पर पधारे पिता परमात्मा के विश्व परिवर्तन के महान कार्य में समर्पित कर परीक्षाओं व समस्याओं में जकड़े पिंजरे के पंछी सम जीवन को स्वतन्त्र पंछी समान अनुभव कर रहा था। बीते हुए जीवन काल के दृश्य मेरे मानस पटल पर चित्रपट सदृश छाने लगे। तथा प्रभु मिलन की तड़पन विभिन्न प्रकार के भटकाव पूर्ण रास्ते से गुजरने के फलस्वरूप हुई परेशानी रूपी परीक्षाओं को दृष्टिपात कर मैं स्वयं से मन-ही-मन कहने लगा—"यदि मैं लक्ष्य बिन्दु तक पहुँचने के लिए इतनी दृढ़ता पूर्वक आशाओं की पतवार बनाकर आगे नहीं बढ़ा होता तो मेरे जीवन की यह नैया मझधार में ही होती तथा प्रभुमिलन के परमानन्द प्राप्ति से वंचित रहता।"

यकायक मेरी दृष्टि प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण घास के पौधों पर पड़ी। मधुर-मधुर मुस्कान भरी सुकोमल हरी-भरी पत्तियों से सुशोभित पौधों की प्रसन्नता को जानने का जिज्ञासा भाव मेरे मन में जागृत हुआ। मैंने बहुत ही भावपूर्ण शब्दों में पौधे से आत्मकथा स्पष्ट करने का आग्रह किया।

खुशी में झूमते जन-जन को शीतलता प्रदान करने वाले इन पौधों ने बहुत ही आदर सूचक शब्दों में कहा, "जीवन जगत के सर्व श्रेष्ठ प्राणी मानव! मेरी हरियाली उसी की कृपा दृष्टि के फलस्वरूप है जिसने आपके परेशानियों एवं कठिनाइयों से भरे सूखे जीवन में हरियाली भर दी है। मेरा जन्म पर्वत शिखर के समीप एक छोटी-सी समतल पहाड़ी पर हुआ था। जन्म से ही पानी का अभाव मेरे जीवन को विकसित होने में बाधक हुआ। फिर भी इन्द्रदेव की कृपा दृष्टि के फलस्वरूप मैं पूरे वर्ष में केवल बरसात के दिनों में शीतल जल से अपनी प्यास बुझाकर आत्म सन्तोष करता रहता था। किन्तु सूर्य की प्रचण्ड किरणों ने मेरा सारा बदन झुलसा दिया था। दाहिनी ओर कुछ दूरी पर स्थित सुगन्धित पुष्पों को अपने गोद में छुपाये प्रसन्नता में झूमते पौधों को देखकर मेरे मन में एक ही प्रश्न उठता था, "काश! मैं भी इस वृक्ष का फूल होता तो प्रभु के चरणों में जीवन को न्योछावर कर धन्य-धन्य अनुभव करता।"

इस प्रकार सूर्य की प्रचण्ड धूप को सहन करते हुए विकास की ओर उन्मुख रहा। एकाएक एक दिन बहुत ही तेज तूफान आया जिसने मेरे सारे बदन को तरोड़ मरोड़ डालने का भरसक प्रयत्न किया। मैं उस दिन प्रभु के प्रति समर्पित भाव से अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए उसकी अधीनता स्वीकार करता धाराशायी हो गया। तथा तूफान के निकल जाने पर पुनः खड़ा हो गया। मैंने देखा बड़े बड़े वृक्ष तूफान की अधीनता स्वीकार करते झुके नहीं तथा मेरे देखते-देखते अपना समूचा अस्तित्व खो बैठे। अर्थात भयंकर तूफान ने उन्हें जड़ से उखाड़ फेंका। उस दिन से मेरे जीवन में प्रभु की असीम कृपा का गुणगान करते हरियाली छाने लगी।

संघर्षमय जीवन को साहस पूर्वक बिताने वाले हे मानव ! सुनो, मैं पुनः हरियाली से भरपूर हुआ ही था कि दुर्भाग्य से एक ओर संकट आ पहुँचा। एक जंगली जानवरों का समूह अपनी क्षुधा तृप्ति के लिए मेरे समीप आ पहुँचा तथा विभिन्न प्रकार की क्षमा याचनाओं के बावजूद भी मुझे अपने विशाल मुख में समाने लगे। उन्होंने मेरे पृथ्वी से ऊपर के सम्पूर्ण भाग को भोजन बनाकर समाप्त कर दिया। मेरे जीवन की सहयोगिनी हरी भरी सुकोमल पत्तियों के अभाव में अब मेरे सामने विषम परिस्थिति आ गयी। मैं अपनी हरी पत्तियों से वायुमण्डल द्वारा हवा प्राप्त कर भोजन बनाकर अपना गुजारा करता था। किन्तु आज हरी पत्तियों के अभाव में मैं भूख-प्यास से तड़पने लगा।

तड़पन से व्याकुल मैंने अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए इन्द्रदेव से प्रार्थना की कि इस बार मेरी दयनीय दशा को देखते हुए पानी शीघ्र भेज देना। किन्तु हे मानव ! आप तो जानते ही हो, परेशानियों के दिनों में कभी-कभी मित्र भी शत्रु बन जाया करता है। इस वर्ष इन्द्र देव ने भी मुझसे किसी पिछले जन्म का अपना बदला लिया तथा पूरे वर्ष में एक बूंद तक पानी नहीं बरसा। पानी के अभाव से अब मेरा दम घुटने लगा। रात-दिन प्रभु से प्रार्थना करता रहता, "हे प्रभु मुझे इस जीवन की असह्य पीड़ा से छुटकारा दो ! मेरा जीवन समाप्त कर मुझे अपनी बांहों में समा लो।"

कृपानिधि, दयानिधि प्रभु की तो महिमा ही अपरम्पार है। मुझ दुखिया की पुकार को सुनकर मानव जगत के सर्व श्रेष्ठ मानव 'प्रजापिता ब्रह्मा' के तन में प्रवेश कर मुझे अपनी पावन नजर से निहाल करने आ पहुँचे। उन्होंने मुझे उस पहाड़ी से उठाकर चूमते हुए मुझे अपनी गोदी में समा लिया और इस पावन भूमि पर लाकर मेरा अस्तित्व स्थापित किया। नित्य प्रति प्रेम सलिल देते तथा अपने कृपाकरों से मेरा लालन पालन किया है। तथा आप जैसे असंख्य योगियों के चरण कमलों के स्पर्श ने मेरे रोम-रोम को पुलकायमान बनाते रहे हैं। इस प्रकार जीवन के निराशा भरे संसार में आशाओं के उमड़ते सागर को देख-देखकर मैं सदा प्रसन्नता में झूमता रहता हूँ।

किन्तु हे पदमापदम भाग्यशाली मानव ! तू कितना न खुश रहता होगा। एक ओर जिसे संसार खोज रहा है जिसके एक झलक पाने के लिए संसार की बड़ी-से-बड़ी कुर्बानी कर रहा है किन्तु अज्ञानवश पाने में असफल है। लेकिन दूसरी ओर जीवन जगत में हरियाली लाने वाले विश्व रचयिता पिता परमात्मा को आपने पहिचाना है तथा उनकी दुलार भरी गोद में समाकर अपने जीवन के हर पल को अतीन्द्रिय सुख के सागर में सराबोर कर लिया है। किन्तु याद करो जिस प्रकार मैं जीवन की जटिलताओं में केवल एक ईश्वर का ही सहारा लेकर आगे बढ़ता रहा हूँ ठीक उसी प्रकार तूने भी अपने सम्पूर्ण जीवन को प्रभु प्रति-समर्पित कर हर कदम में सफलता प्राप्त करते जीवन के लक्ष्य को प्राप्त किया है।

सूचना

अभी तक भी कई सेवा केन्द्रों से ज्ञानामृत, वर्ल्डरीन्युवल के सदस्यों की संख्या नहीं आई है। कृपया शीघ्र लिखें।

व्यवस्थापक

रेडियो काश्मीर, जम्मू युवा वाणी से प्रसारित

विद्यार्थी जीवन का शृंगार—आध्यात्मिकता

ब्र० कु० कृष्णा, जम्मू

सृष्टि के गतिमान होने का ज्ञान हमें, समय प्रति समय उसमें होने वाले परिवर्तनों से प्राप्त होता है अतः सृष्टि परिवर्तनशील है। परिवर्तन का सीधा सम्बन्ध प्रकृति तथा मानव समाज से है। आदि काल से ही मनुष्य सौंदर्य प्रिय रहा है। प्राकृतिक सौंदर्य तो आज भी हमें जहाँ-तहाँ देखने को मिलता है लेकिन जहाँ तक मानव समाज के सौंदर्य की बात है यह दिन प्रतिदिन लुप्त होता जा रहा है। क्योंकि मानव समाज का प्रमुख वर्ग विद्यार्थी जो कि भूतकाल से वर्तमान को और वर्तमान के आधार से भविष्य को श्रेष्ठ बनाने वाला ही आज अपने जीवन से असन्तुष्ट निराशावादी और निरुत्सहित होकर यथार्थ व आदर्श से दूर होता जा रहा है।

जबकि मानव को ईश्वर सृष्टि का शृंगार और विद्या को मानव जीवन का शृंगार माना जाता है, और विद्यार्जन करने वाला यह विद्यार्थी अपने जीवन के महत्व को खोता जा रहा है। वास्तव में विद्यार्थी जीवन को कहा जाता है—"Golden period of Life" शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपना सर्वांगीण विकास कर सकता है। किन्तु वास्तविकता आज हम कुछ और ही देखते हैं। आज का विद्यार्थी स्वतः अपने लिए एक समस्या है वैसे ही दूसरों के लिए भी एक समस्या होकर रह गया है। जिन्दगी की भीड़ में आज प्रत्येक व्यक्ति दौड़ रहा है किन्तु अन्तिम लक्ष्य के वास्तविक ज्ञान से वह अनभिज्ञ है। यदि किसी विद्यार्थी से पूछा जाए कि आप क्यों पढ़ते हैं तो उनसे यही सहज उत्तर मिलता है कि "माँ बाप की इच्छा है कि हम पढ़ें। वैसे हमारी कोई इच्छा नहीं, आखिर पढ़कर भी क्या करना है ? नौकरी तो मिलेगी नहीं, बस वक्त गुज़ार रहे हैं।"

अब हमें इस बात पर विचार करना होगा कि विद्यार्थियों का इतना नैतिक पतन हुआ कैसे ? पहले के विद्यार्थी नैतिक बन्धनों में बंधे हुए थे। पुरातन काल में वे ज्ञानार्जन के लिए जंगलों में गुरुओं के पास जाते थे और उनका उद्देश्य होता था।

सादा जीवन उच्च विचार, यही है विद्यार्थी का शृंगार

वर्तमान युग में विद्यार्थी के पास नैतिकता नाम की चीज़ ही नहीं रही है। उनके जीवन-स्तर को देखते हुए यही कहा जा सकता है कि—फैशनेबल जीवन नीच विचार, आधुनिक विद्यार्थी का है शृंगार।

वर्तमान विद्यार्थी समस्याओं के बीच घिरा हुआ है। निरुद्देश्य सा मृगतृष्णा वश भटक रहा है। यही कारण है कि आज की "विद्यार्थी समस्या" ने एक उग्र रूप धारण कर लिया है। विद्यार्थी वर्ग का यह मानसिक असन्तोष समय प्रति समय नाना प्रकार के रूपों में हमारे सामने आता है। कभी भूख हड़ताल करता है तो कभी आन्दोलन और तोड़ फोड़, यहाँ तक कि वह अपने अध्यापकों की हत्या करने में भी संकोच नहीं करता, जबकि शिक्षा का लक्ष्य है मानसिक अन्धकार को समाप्त करना तथा कर्मों का व्यवहारिक जीवन के साथ श्रेष्ठ सम्बन्ध बनाना। परन्तु यह भी तभी सम्भव होगा जब विद्यार्थी के समक्ष विद्या का सही उद्देश्य होगा।

आजकल की पढ़ाई से मनुष्यों के जीवन जीने का स्तर (Standard of Living) तो ऊँचा हो जाता है परन्तु चरित्र (Character) जीवन जीने का स्तर नीचा हो रहा है। ऐश-आराम मुख्य लक्ष्य बन चुका है। तोड़ फोड़ को ही आज का विद्यार्थी स्वयं का आदर्श समझ बैठा है। वास्तव में देखा जाए कि यह सब हरकतें विद्यार्थी जीवन चरित्र को नष्ट करने

वाली हैं इसलिए कहा जाता है—Wealth is Lost Noting is Lost, Health is Lost Somthing is Lost, but when Character is Lost everything is Lost अर्थात् यदि चरित्र गया तो सब कुछ गया। (Character is the foundation of life)अत: 'चरित्र' जीवन रूपी इमारत की बुनियाद ही मजबूत न हो तो इमारत के जल्दी ही गिर जाने की सम्भावना अधिक होती है। अतएव हमें विद्यार्थी के जीवन रूपी बुनियाद को सही ढाँचे में डालने के लिए विद्यार्थी के चरित्र पर ध्यान देना जरूरी है। विद्यार्थियों का इस प्रकार का चरित्रहीन, लक्ष्यहीन, अनुशासनहीन होने के लिए मुख्यत: आज की शिक्षा प्रणाली जिम्मेदार है। वास्तव में शिक्षा वह पद्धति है जो हमारी नैसर्गिक, आन्तरिक एवं अन्तर्निहित शक्तियों एवं योग्यताओं को प्रकट करने तथा उनका अधिक विकास होने में सहायक होती है। किन्तु वर्तमान समय की शिक्षा प्रणाली में जो पाठय-विषय विद्यार्थी के लिए दिए गए हैं—जिसे पढ़कर क्या विद्यार्थी जीवन का उद्देश्य सफल रहा है, क्या सचमुच यह शिक्षा प्रणाली विद्यार्थी को मन, वचन कर्म से श्रेष्ठ एवं मर्यादायुक्त बना रही है? अर्थात् नहीं। हम यह न भूल कि हमारा पाठ्यक्रम ही ऐसा रखा गया कि जिससे किसी को यह महसूस तक नहीं होता कि हमारी बुद्धि विवेक से युक्त एवं दिव्य भावों से सम्पन्न है। आज हमारी शिक्षा इस संसार के भौतिक पदार्थों को ही सब कुछ मान बैठी है। वास्तव में "आध्यात्मिक ज्ञान ही मनुष्यता की आधार शिला है" यह न समझने में हमने बड़ी भूल की है। अत: आज हमें ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है किजिससे मानव में मानवता तथा नैतिक व चारित्रिक विकास हो।

अत: मानवता को ह्रास से बचाने के लिए सबसे पहले और सबसे बड़ा एवं अनिवार्य उपाय वर्तमान शिक्षा प्रणाली में, वर्तमान शिक्षा-दीक्षा में, वर्तमान पाठ्य-विषयों में परिवर्तन है। क्योंकि शिक्षा का सीधा और निकट सम्बन्ध विद्यार्थी जीवन से है।

विद्यार्थी ही राष्ट्र का प्रमुख अंग माना जाता है। इसलिए कहते भी हैं "Student is the Back Bone of the Nation)" आज का विद्यार्थी कल देश का कर्णधार होगा। वास्तव में विद्यार्थी का कर्तव्य है कि वह आध्यात्मिक ज्ञान अर्जित करे और समाज सेवी बन समाज की सेवा करे। समाज सेवी बनने से ही वह देश सेवी बन सकता है। जिससे कल का भारतीय नागरिक अपने साहित्य, संस्कृति एवं दर्शन में मनुष्य के मूल्य को पा सके।

आध्यात्मिक जीवन क्या है?

मानव जीवन के विकास के लिए आध्यात्मिकता एक सुन्दर उपहार है। आध्यात्मिकता केवल श्रद्धा का विषय नहीं है बल्कि ईश्वरीय सम्बन्धों, ज्ञान की गुह्यता को जानना और उसके प्रत्येक तथ्य की अनुभूति करना भी है। प्राचीन काल की परम्पराओं एवं मान्यताओं में मिश्रित हुई अन्ध श्रद्धा पर आधारित अनेक रूढ़िवादी परम्पराओं को तिलांजलि देने तथा इन्हें मूल रूप से परिवर्तित करने का श्रेय भी आध्यात्मिकता की अमूल्य शिक्षा को ही है। इसलिए कहा जाता है कि "आध्यामिक जीवन नैतिक उत्थान की प्रथम सीढ़ी है।" यही मुख्य साधन है जो मानव-जीवन को लक्ष्य की ओर अग्रसर करता है। साथ-साथ इसे अपनाने से सम्पूर्ण मनुष्यात्माओं की ज्योति प्रज्जवलित होती है। और आध्यात्मिकता से इन्सान में मानवीय गुणों का समावेश होता है। अत: जहाँ तक विद्यार्थी जीवन का सम्बन्ध आध्यात्मिकता से है वहाँ विद्यार्थी जीवन पवित्र और एकाग्रता वाला बन जाता है। विद्या का यह पुजारी अपने को एक ही दिशा स्तर और यथार्थ भावनाओं पर आधारित अपना चरित्र सपाट और सुरक्षित आधार शिला की तरह बना लेता है। क्योंकि विद्यार्थी जीवन मानसिक और शारीरिक दृष्टि से बलिष्ठ होता है और जब एक विद्यार्थी का सम्बन्ध आध्यात्मिकता से जुड़ जाता है तब उसकी शक्ति परिवार, समाज और राष्ट्र का शृंगार बन जाती है।

"सच्चा सलोगन"

ब्र० कु० राजकुमारी नागपाल, शालीमार बाग, देहली

बाहर के कलियुग के पहले—
मन का कलियुग खत्म करो।
स्थूल विज्ञापन के पहले—
सूक्ष्म विकर्म भस्म करो॥
बहुत हो लिए चित्र प्रदशन,
खूब किए बाहरी परिवर्तन,
छोड़ दिए तन के आभूषण
अब दिव्य गुणों का भूषण धरो।
बाहर के कलियुग के पहले—
मन का कलियुग खत्म करो॥

भक्ति का दावा तो लोग भी करते हैं,
ज्ञान सुनाने का बहुत दम भरते हैं,
है आवश्यकता अब अन्तः अनुभव की
ईश्वरीय अनुभूति औ आत्मस्थिति की
होगा वो तब ही—
रूहानियत का जब वरण करो।
बाहर के कलियुग के पहले—
मन का कलियुग खत्म करो॥

चले आए कितना आगे, न सोचना कभी,
चलना है और कितना, मंजिल कितनी दूर अभी,
आखिर जब है ही फरिश्ता बनना,
तो फिर उनके लिए पड़ेगा मरना,
न थको, न हारो—
विजय जन्म सिद्ध अधिकार हमारा,
सदा यही स्मरण करो।
बाहर के कलियुग के पहले,
मन का कलियुग खत्म करो॥

विकार हमारी चीज़ नहीं,
अहं भाव तो शान्ति का बीज नहीं।
आदि संस्कार हमारे पवित्रता के,
हम तो असल देवता थे।
अरे छोड़ ! बाहरी प्रभावों को,
न देख सांसारिक अभावों को,
ऊपर के ब्रह्मचर्य से पहले,
ज्ञान में आन्तरिक, विचरण करो।
बाहर के कलियुग के पहले,
मन का कलियुग खत्म करो॥

मेरा - छोड़ अभी,
घर तो तेरा है ऊपर, देख पुकारे
सर्वस्व मिलेगा उसे ही,
जो छोड़े सर्वस्व,
बिन्दु बन जावे।
छोड़ के सारे जाल—
'वन औ विन', सलोगन संग धरो।
बाहर के कलियुग के पहले—
मन का कलियुग खत्म करो॥

(विनाश की भयंकर तैयारियाँ—पृष्ठ १८ का शेष)

ज्यादा जल्दी से कदम उठाये। उसमें से एक वक्त सतरह मिनिट बाकी थे और दूसरे वक्त तो सिर्फ ७ मिनिट ही बाकी थे और गलती पता चली। यदि इस गलती को गलती के रूप में न पहचाना होता तो? १९७९ वर्ष में हुए इन गलतियों के कारण वहाँ के शस्त्र दल के मुख्य अधिकारी ने जाहिर रीति क्षमा भी मांगी लेकिन फिर भी १९८० वर्ष में १७ दिन के अंदर दो बार गलती हुई थी लेकिन 'विश्व' विनाश के पथ पर जाते बच गया। एक लेखक तो ऐसा मानता है कि जैसे संभाल के रखी हुई कोई वस्तु बिगड़ जाती है, जैसे कोई एक बाम्ब का ऊपर का कवच गल या तो टूट गया तो क्या होगा? या अणुशस्त्र ले उड़ते विमानों में से कोई बिगड़ जाए या किसी खामी के कारण बाम्ब गिर जाए तो? यह तो सभी को पता है कि १९७३ में अमेरिकन विमान में से एक बाम्ब अफ्रीका के अल्जीरिया के नजदीक समुद्र में गिरा था लेकिन उसका फ्यूज निकाल लिया था और दूसरा बाम्ब पानी में गिरने के कारण बच गया। लेकिन अगर यह बाम्ब पृथ्वी पर गिरा होता तो क्या होता?

परमपिता शिव परमात्मा ने तो पहले ही कल्प-वृक्ष के चित्र में दिखाया है कि विनाश अमेरिका तथा रशिया के बीच अणुयुद्ध यथा अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध द्वारा होने वाला है। फिर भी कई लोग अज्ञान की नींद में कुम्भकर्ण समान सोये पड़े हैं और होने वाले विनाश और भयानक युद्ध से निश्चिंत और बेफिकर हैं। वर्तमान में छप रही पुस्तकें, पत्रिकाएं इत्यादि द्वारा मिलते हुए ताजे, नये समाचार और अंकों के आधार पर सर्व पाठकगण इस सूचना को स्वपरिवर्तन के लिये योग्य रूप में स्वीकार करेंगे और ज्यादा से ज्यादा आध्यात्मिक पुरुषार्थ करेंगे। ●

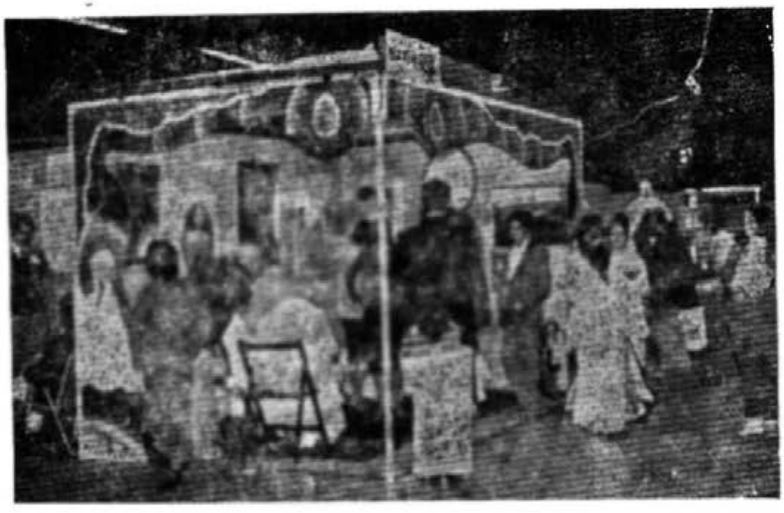

लीड्स (इंगलैंड) में आयोजित नादर्न फेयर (Northern FAIR) में राजयोग स्टाल लगाया गया जिसे हज़ारों लोगों ने देखा।

पवित्र बनो, राजयोगी बनो

आध्यात्मिक सेवा-समाचार

रांची संग्रहालय की ओर से दुर्गा मंदिर के विशाल प्राँगण में चार दिवसीय विश्व-शांति आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह प्रवचनों, दिव्य गीत झाँकी एवं नृत्य प्रदर्शन, प्रोजैक्टर शो के विविध कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुआ जिससे सभी वर्गों के लोगों ने लाभ उठाया।

चंडीगढ़ तथा कसौली सेवा केन्द्र की ओर से गढ़वाल शहर, गढ़वाल गाँव, एम० ई० एस० कालोनी कसौली; मोहन मीकिन ब्रेवरीज कसौली, तथा मोहाली में आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचनों द्वारा ईश्वरीय ज्ञान की लहर फैलायी गई।

काठमंडो सेवा केन्द्र से शीला बहिन लिखती हैं कि यहाँ से १५० कि० मी० दूर नारायणगढ़ में तीन दिन की विश्व-नव-निर्माण आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी लगाई गई, जिससे लगभग १०.००० आत्माओं ने लाभ उठाया। झाँकियों सहित शांति यात्रा भी निकाली गई।

भावनगर सेवा केन्द्र तथा महुआ उप-सेवा केन्द्र की ओर से जनजागृति हेतु प्रदर्शनी, प्रवचन, शोभा-यात्रा, चैतन्य देवियों की झाँकी व शिविर आदि के विविध कार्यक्रम रखे गए। कुमारियों के आत्मिक उत्थान के लिए भी त्रिदिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके अतिरिक्त कई स्थानों पर स्नेह मिलन के कार्यक्रम भी रखे गए।

बोरावली (बम्बई) सेवा केन्द्र की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग केन्द्र माउंट आबू में मई मास में राजयोग शिविर के दो ग्रूपों का आयोजन किया गया जिनसे १२८ शिवरार्थियों ने लाभ उठाया, जिनमें सभी विशिष्ट व्यक्ति थे। मुख्य प्रवचन कर्त्ता तथा शिक्षक थे ब्र० कु० मनोहर इन्द्रा, ब्र० कु० रत्न मोहिनी जी, ब्र०कु० शीलू बहन, ब्र० कु० शशी बहिन तथा ब्र० कु० निर्वैरजी व भ्राता करुणा जी।

कटक सेवा केन्द्र की ओर से २०० कि० मी० दूर क्योंझर जिला में त्रिदिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त कटक के स्थानीय स्कूल में, माइनिंग स्कूल में तथा जगन्नाथ मंदिर में प्रोजैक्टर शो के कार्यक्रम रखे गए जो कि बहुत सफल रहे।

विजयवाड़ा सेवा केन्द्र से सविता बहिन लिखती हैं कि आन्ध्र प्रदेश का अन्धकार मिटाने हेतु दो से बारह जून तक विजयवाड़ा में विश्व-शान्ति महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसके पहले शोभा-यात्रा तथा झाँकी भी निकाली गई। प्रैस रिपोर्टर्स तथा विशिष्ट व्यक्तियों के स्नेह मिलन भी रखे गए। मेले से अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

अहमदाबाद (मणिनगर) सेवा केन्द्र की ओर से बापूनगर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी शोभा-यात्रा एवं प्रोजैक्टर शो का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त कलोल में भी प्रवचनों तथा स्नेह मिलन के कार्यक्रम रखे गए जिससे अनेकानेक आत्माएँ लाभान्वित हुईं।

भटिंडा सेवा केन्द्र की ओर से २२ से ३१ मई तक मानसा मंडी में एक विशाल प्रदर्शनी व राजयोग शिविर का आयोजन किया गया, जिनसे लगभग १०.००० आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

नांदेड़ उप सेवा-केन्द्र की ओर से बिलोली के "धर्म समाज प्रबोधन दशातार" विशाल कार्यक्रम के अन्तर्गत १३ से २० मई तक सात दिवस के लिए जन-जन को शिवबाबा का संदेश देने के लिए शिव-दर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया इसके अतिरिक्त नया गाँव के मंदिर में मुखेड़ तहसील में तथा शम्वोली में प्रवचन तथा प्रोजैक्टर द्वारा शिवबाबा का संदेश दिया गया।

मंगलूर सेवा केन्द्र की ओर से केरल जिला के कासरगोड ताल्लुका में आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर के आयोजन किए गए।

अम्बाला कैंट सेवा केन्द्र की ओर से एयर फोर्स क्वार्टरर्स में त्रिदिवसीय योगशिविर का आयोजन किया गया तथा शाहजादपुर राजयोग केन्द्र की ओर से प्रदर्शनी, शांति यात्रा, प्रवचन, गीत, स्नेह मिलन आदि के कार्यक्रम रखे गए।

औरैया सेवा केन्द्र से ब्र० कु० ऊषा लिखती हैं कि मई मास में तिलक इंटर कालेज में चरित्र-निर्माण राजयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन परगना मैजिस्ट्रेट भ्राता मनराखन लाल शर्मा जी ने किया। प्रदर्शनी को लगभग २००० आत्माओं ने देखा।

ऋषिकेश गीता पाठशाला की ओर से आई० डी० पी० एल० फैक्ट्री में चार दिवसीय चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन फैक्ट्री के जनरल मैनेजर भ्राता वी० एस० वजाज द्वारा सम्पन्न हुआ। प्रदर्शनी से अनेक आत्माएँ लाभान्वित हुईं।

डीसा (गुजरात) सेवा केन्द्र द्वारा गत मास में विश्व-शान्ति आध्यात्मिक मेला और सहज राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह में दादी जी व हृदयमोहिनी जी मधुबन से बस लेकर पहुँचे। मेला २६००० आत्माओं ने देखा।

पेटलाद सेंटर की ओर से कैम्बे (खंभात) शहर में एक मिनी मेले का आयोजन किया गया, जिसमें रोटरी क्लब आफ कैम्बे ने विशेष रूप से सहयोग दिया।

दार्जीलिंग सेवा केन्द्र की ओर से ३० मई से ३ जून तक एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिससे अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

ग्रावों सेवा-केन्द्र पर १-६-८२ को द्वितीय वार्षिक उत्सव बड़े ही धूमधाम से उत्साह पूर्वक मनाया गया जिसमें शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा गीता पाठशाला के भाई-बहिन बड़ी संख्या में उपस्थित हुए।

जामनगर सेवा केन्द्र की ओर से २० कि० मी० दूर आमरा गाँव में प्रवचन तथा प्रोजैक्टर शो दिखाया गया। इस गाँव में इस श्राप के कारण कि जब तक २५० मन नमक नहीं खाएँगे तो दुःखी रहेंगे, एक बहुत बड़ा यज्ञ रचा गया। जिसमें देश-विदेश से आए हुए सभी लोगों को लाखों की संख्या में परमपिता का संदेश दिया गया।

भंडारा सेवा-केन्द्र की ओर से विर्सी गाँव तथा तुमसर गाँव में प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किये गए।

(योग बल—पृष्ठ १२ का शेष)

द्वारा स्वयं को हर कर्म के प्रभाव से शून्य रक्खा जा सकता है। शारीरिक व्याधि के समय, दुख से निर्लिप्त, कर्म करते कर्म प्रभाव से निर्लिप्त, देखते-सुनते, उसके प्रभाव से निर्लिप्त आदि आदि। और तब ही आत्मा कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कर सकती है।

योग-बल के लिए ८ घण्टे योग की आवश्यकता—

ये योग-बल जिससे विश्व पर स्वर्ग बनाया जाता है, इस योग-बल की इन सभी सिद्धियों की प्राप्ति का आधार कम से कम प्रतिदिन ८ घण्टे योग-अभ्यास आवश्यक है। क्योंकि इसके बाद ही आत्मा की विकर्माजीत स्थिति आती है और योग एक बल के रूप में अनुभव होता है और तब ही हम वह कर व करा सकते हैं जो हम चाहते हैं।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, बी 9/19 कृष्ण नगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा गगन प्रिण्टर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-51 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70